प्रेरणा विचार

RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹ : 30/-
मासिक
श्रावण-भाद्रपद, विक्रम संवत् 2082 (अगस्त -2025)
पृष्ठ-36, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

स्वतंत्रता दिवस

भारत के आत्मस्वरूप की पुनर्प्राप्ति का दिन

INTO
YOUR
LIFE
SURYA
रिश्तों की ज़िंदगी में रोशनी फैलाता–आपका अपना सूर्या।
सूर्या रोशनी – सिर्फ रोशनी नहीं, भरोसे का नाम है। एक ऐसा भरोसा जो रिश्तों में प्यार की रोशनी भरता है। बात रोज़ की ज़रूरतों की हों या आपकी सुरक्षा की, हमारी कोशिश रही है कि हम – हमेशा आपको कुछ नया दें, और आपके इस भरोसे को और भी मज़बूत बनाएं।
आइए मिलकर इन सुंदर पलों को और भी ज्यादा रोशन करें एवं विकसित भारत की ओर तेज़ी से कदम बढ़ाएँ।
Consumer Lighting | Steel & PVC Pipes | Fans | Appliances | Professional Lighting
I am SURYA
50 YEARS OF TRUST
DURABLE PRODUCTS
ASSURED QUALITY
SURYA ROSHNI LIMITED | www.surya.co.in | surya | surya_roshni | surya.roshni | surya-roshni
Email: info@surya.in Tel.: +91-11-47108000

प्रेरणा विचार

वर्ष -3, अंक - 08

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
अनिल त्यागी

प्रबंध निदेशक
बिजेन्द्र कुमार गुप्ता

सलाहकार मंडल
श्याम किशोर, डॉ. अनिल निगम
अशोक सिन्हा

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62,
नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851
मोबाइल : 9354133708,9354133754
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक

इस अंक में

स्वतंत्रता दिवस
भारत के आत्मस्वरूप की पुनर्प्राप्ति का दिन-05

एक विराट संगठन का छठा
महा अभियान -09

टीआरएफ को आतंकी संगठन घोषित
करने के अमेरिकी निहितार्थ -22

मौसम और अध्यात्मिकता का
आदर्श मिश्रण : अगस्त -30

हिन्दू अखंड भारत और स्वतंत्रता दिवस 07

शताब्दी वर्ष : संकल्प पथ पर उन्नत होते जा रहे स्वयंसेवक....................11

संघ शताब्दी वर्ष : सांस्कृतिक पुनर्जागरण का नूतन पर्व....................14

हिन्दी के विरुद्ध बेसुरी आवाजें!....................16

भारत का संतुलनकारी दृष्टिकोण 18

स्वच्छता एवं नशामुक्ति के क्षेत्र में अतुलनीय कार्य करते सामाजिक संगठन....................20

धम्मचक्कपवत्तन (धर्मचक्रप्रवर्तन)....................24

आत्मनिर्भर स्टोरी....................27

भारत और विश्व व्यापार एक विकासशील राष्ट्र की वैश्विक छलांग....................28

एआई की दुनिया : 2025 की चौंकाने वाली क्रांतियां....................32

पुस्तक समीक्षा....................34

भारत का नीति नियामक सूत्र बनता राष्ट्रप्रथम

भारत अपनी स्वाधीनता के 78 वर्ष पूरा करने की दहलीज पर है। मानवीय उम्र की दृष्टि से 78 की संख्या भले ही बुढ़ापे का अहसास कराती हो, परंतु राष्ट्र के रूप में भारत आज दुनिया का सर्वाधिक जनसंख्या वाला तथा सर्वाधिक युवा राष्ट्र है। ऐसे अवसर पर राष्ट्रीय लक्ष्यों की कसौटी पर भारत की वर्तमान स्थिति का आकलन यह जानने के लिए आवश्यक है कि क्या वर्तमान दिशा भविष्य के राष्ट्रीय लक्ष्यों को पूरा करने वाली है? निसंदेह, भारत ने सामाजिक, राजनैतिक, तथा आर्थिक क्षेत्रों में संतोषजनक प्रगति की है। भारत का दुनिया की चौथी अर्थव्यवस्था तथा विशालतम लोकतंत्र के रूप में उभरना, उसकी आर्थिक उन्नति तथा बढ़ते वैश्विक प्रभाव का द्योतक है। भारत ने आधारभूत संरचना, अंतरिक्ष, परमाणु शक्ति, रक्षा/सुरक्षा सामग्री, खाद्यान, पेय जल, विज्ञान-प्रद्योगिकी, सामाजिक समरसता आदि के क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। भारत पुनः अपने सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिए कटिबद्ध है। इसी क्रम में उसने गुलामी के मानसिक जड़त्व से मुक्त होते हुए अपने सांस्कृतिक मानबिन्दुओं के संरक्षण, जीर्णोद्धार तथा नव-निर्माण पर बल दिया है। आज आम जनता ने दासता के प्रतीकों को मिटाने तथा आक्रान्ताओं के महिमामंडन को हतोत्साहित करने का बीड़ा उठाया है। ऑपरेशन सिंदूर ने प्रदर्शित किया है कि भारत अब राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा से कोई समझौता न करते हुए राष्ट्र-प्रथम के भाव को ही नीति-शास्त्र का मूल-मंत्र मानेगा। भारत ने दुनिया को स्पष्ट संदेश दिया है कि वह अपनी सुरक्षा के लिए न तो कहीं भी हमले करने में संकोच करेगा और न ही किसी परमाणु धमकी से ब्लैकमेल होगा। देर से ही सही परंतु अब भारत ने अपनी धरती पर किए जाने वाले आतंकी हमले को युद्ध की कार्रवाई मानने की दुरुस्त नीति की घोषणा की है। भारत अब किसी देश का पिछलग्गू न होकर अपने हितों को प्राथमिकता देते हुए स्वतंत्र नीति निर्मित कर रहा है। रूस के साथ भारत ने ऊर्जा और रक्षा व्यापार को आगे बढ़ाते हुए रणनीतिक सहयोग को व्यापार में बदल दिया है। ऐसे में उसने यूरोप तथा अमेरिका की गीदड़भभकी को नजरअंदाज कर दिया। अमेरिका भारत का सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य बन गया है, विशेष रूप से सूचना तकनीक सेवाओं, फार्मास्यूटिकल्स और परिधान के क्षेत्र में। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, एक देश एक चुनाव, और महिला आरक्षण का प्रभावी कार्यान्वयन, विकसित भारत की यात्रा में मील के पत्थर साबित होंगे।

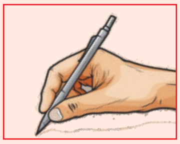

निसंदेह, भारत ने सामाजिक, राजनैतिक, तथा आर्थिक क्षेत्रों में संतोषजनक प्रगति की है। भारत का दुनिया की चौथी अर्थव्यवस्था तथा विशालतम लोकतंत्र के रूप में उभरना, उसकी आर्थिक उन्नति तथा बढ़ते वैश्विक प्रभाव का द्योतक है। भारत ने आधारभूत संरचना, अंतरिक्ष, परमाणु शक्ति, रक्षा/सुरक्षा सामग्री, खाद्यान, पेय जल, विज्ञान-प्रद्योगिकी, सामाजिक समरसता आदि के क्षेत्रों में उललेखनीय प्रगति की है। भारत पुनः अपने सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिए कटिबद्ध है। इसी क्रम में उसने गुलामी के मानसिक जड़त्व से मुक्त होते हुए अपने सांस्कृतिक मानबिन्दुओं के संरक्षण, जीर्णोद्धार तथा नव-निर्माण पर बल दिया है।

स्वाधीनता के बाद हुए अनेकों सकारात्मक परिवर्तनों के साथ ही कुछ चुनौतियां भी समाधान की राह तांक रही हैं। मतांतरण आज देश में महामारी का रूप ले चुका है। भारत के बढ़ते अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव को कम करने के लिए अनेकों शक्तियां यह षडयन्त्र कर रही हैं। दुर्भाग्य से समाज के अंदर की कुछ काली भेड़ लालच तथा स्वार्थ के कारण भारत की हिन्दू पहचान को कमजोर करने में षड्यंत्रकारियों का सहयोग कर रही हैं। इसके लिए भारत विरोधी संस्थाओं तथा सरकारों द्वारा फंडिंग की जा रही है। ऐसे लोगों एवं संगठनों के लिए एक लक्ष्मण रेखा निर्धारित करने का समय आ गया है जो विदेशों में जाकर सोची-समझी रणनीति के तहत भारत की किरकिरी कराते हैं। युवाओं में बढ़ती नशे और ड्रग्स की लत एक राष्ट्रीय समस्या बन गई है। षड्यंत्रकारी शक्तियां इसे भी युवाओं को लक्ष्य से भटकाने के औजार के रूप में प्रयोग कर रही हैं। अभी हाल ही में मादक पदार्थ नियंत्रण ब्यूरो ने चार महाद्वीपों के 10 से अधिक देशों में फैले ड्रग्स रैकेट का पर्दाफाश किया है जिसके तार अमेरिका से जुड़े हैं। ऑनलाइन तथा मशीन आधारित व्यवस्था बढ़ने के बाद भी भ्रष्टाचार उन्मूलन एक पहेली बना हुआ है जिसका समाधान आवश्यक है। भारी संख्या में बांग्लादेशी घुसपैठिये पहचान छिपा कर देश में रह रहे हैं। वहीं लश्कर तथा जैश-ए-मोहम्मद जैसे आतंकवादी समूह नेपाल के रास्ते से भारत में आतंकी भेज रहे हैं। इससे राष्ट्रीय सुरक्षा प्रभावित हो रही है। वास्तव में आज शांति एवं विश्व कल्याण में निर्णायक भूमिका अदा करने हेतु भारत के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के दरवाजे खुलने अनिवार्य है। इसमें होने वाली देरी विश्व शक्तियों की संकुचित मानसिकता का ही प्रकटीकरण होगी। ■

स्वतंत्रता दिवस
भारत के आत्मस्वरूप की पुनर्प्राप्ति का दिन

राम जी तिवारी
वरिष्ठ पत्रकार

15 अगस्त भारत के आत्म-स्वरूप की पुनर्प्राप्ति का प्रतीक है, जब हम अंग्रेजी शासन से मुक्त हुए। अंग्रेजों की 'डिवाइड एंड रूल' नीति ने हमारी सांस्कृतिक एकता को तोड़ने की पूरी कोशिश की थी। पश्चिमी शिक्षा, धार्मिक मतभेदों को बढ़ावा, और भारतीय आत्मगौरव को नष्ट करने के प्रयासों ने देश को केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी परतंत्र बना दिया था। ऐसे में आज यह अत्यंत आवश्यक है कि हम अपने समाज में छिपी सांस्कृतिक शक्ति को पुनर्जीवित करें। राष्ट्र निर्माण के इस पवित्र कार्य में हर भारतीय को अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए, ताकि हम एक मजबूत और समृद्ध भारत का निर्माण कर सकें।

स्वतंत्रता दिवस एक महत्वपूर्ण दिन के रूप में मनाया जाता है। यह दिन भारत की स्वतंत्रता की प्राप्ति की याद दिलाता है, जब 15 अगस्त 1947 को ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्त होकर भारत ने अपनी स्वतंत्रता की प्राप्ति की थी। इस दिन का महत्व केवल राजनीतिक संदर्भ तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, परंपराओं, संघर्षों, बलिदानों और स्वाधीनता संग्राम के नायक बलिदानियों की याद को जीवित रखने का एक अवसर और संबल है। यह दिन हमें अपने देश की संस्कृति के मूल्यों की रक्षा की आवश्यकता का एहसास भी कराता है, जिसे स्वतंत्रता संग्राम के नायक और देशवासियों ने संघर्षों के दौरान संजोया था।

स्वतंत्रता संग्राम और बलिदानियों का योगदान : स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भारतीयों ने एक लंबा संघर्ष किया। यह संघर्ष कोई एक दिन, एक साल या कुछ सालों का नहीं था। यह संघर्ष कई दशकों तक चला, जिसमें हर वर्ग, हर धर्म, हर राज्य, और हर समुदाय ने अपनी-अपनी भूमिका निभाई। महात्मा गांधी के नेतृत्व में अहिंसा का रास्ता अपनाया गया, वहीं सुभाष चंद्र बोस जैसे क्रांतिकारियों ने संघर्ष को एक नई दिशा दी। चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक जैसे महान नेता और क्रांतिकारियों ने अपने जिजीविषा से अप्रतिम योगदान दिया। इन महापुरुषों ने अपने जीवन के सर्वश्रेष्ठ वर्षों को इस लक्ष्य के लिए समर्पित किया कि भारत स्वतंत्र हो और उसकी जनता को गुलामी की बेड़ियों से मुक्ति मिले।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान प्रत्येक आंदोलन में भारतीय संस्कृति और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की भावना की झलक दिखाई देती है। असहमति, विरोध और बलिदान से लेकर अहिंसात्मक प्रतिरोध की दिशा तक, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एक आदर्श संघर्ष बना, जिसमें अहिंसा, सत्य और स्वराज की अवधारणाओं ने न केवल भारतीयों को प्रेरित किया, बल्कि पूरी दुनिया को यह दिखाया कि एकजुटता

और संघर्ष से किसी भी दमनकारी साम्राज्य को नष्ट किया जा सकता है।

भारतीय संस्कृति के मूल्य : स्वतंत्रता दिवस का दिन केवल एक ऐतिहासिक घटना का उत्सव मनाने का दिन नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति के उन अनमोल मूल्यों को संजोने का दिन भी है, जो स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हर भारतीय नागरिक ने अपनी निष्ठा, साहस और समर्पण से व्यक्त किए थे। भारतीय संस्कृति हमेशा से प्रेम, सहिष्णुता, सम्मान और भाईचारे की संस्कृति रही है। यह उन मूल्यों का प्रतीक है, जिन्होंने हमें न केवल अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद की, बल्कि हमें अपने समाज में एकता, सहिष्णुता और सामूहिक समृद्धि के मूल्यों को भी समझाया। भारत की संस्कृति में विविधता का आदान-प्रदान बहुत महत्वपूर्ण है। यहां विभिन्न धर्मों, भाषाओं, जातियों और संस्कृतियों का मिश्रण है, फिर भी इसमें एक समानता है। भारत की संस्कृति के ये मूल्य स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी प्रमुख थे, जब विभिन्न प्रांतों के लोग एक ही लक्ष्य के लिए एकजुट हुए। यही भारतीय संस्कृति का बल था, जिसने अंग्रेजी साम्राज्य को चुनौती दी और हमें एक स्वाधीन राष्ट्र बनने का अवसर दिया।

स्वतंत्रता दिवस का महत्व : स्वतंत्रता दिवस हमें केवल उन संघर्षों और बलिदानों की याद दिलाने का दिन नहीं है, जिनसे हमने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की, बल्कि यह हमें अपनी जिम्मेदारियों की याद भी दिलाता है। हमें यह समझना चाहिए कि स्वतंत्रता केवल एक उपहार नहीं है, बल्कि एक जिम्मेदारी भी है। हर भारतीय नागरिक को यह समझना चाहिए कि हम सब मिलकर भारतीय संस्कृति के मूल्यों की रक्षा करने में सहायक बनें। हमें सामूहिक रूप से अपने देश के प्रति प्रेम और आदर्शों का पालन करना चाहिए। इस दिन हम अपनी स्वतंत्रता का उत्सव मनाते हैं और उन नायकों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, जिनकी वजह से हम स्वतंत्र हैं।

स्वतंत्रता दिवस हमें यह समझाने का दिन है कि भारतीय संस्कृति के अनमोल रत्नों का संरक्षण करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारी परंपराएं और मान्यताएं आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचें और भारत की पहचान के रूप में बनी रहें। यह हमारे लिए केवल एक ऐतिहासिक कृतज्ञता का दिन नहीं, बल्कि एक निरंतर संघर्ष का प्रतीक है।

संस्कृति की रक्षा और उसकी दिशा : स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, हमारा देश उन मूल्यों को आगे बढ़ाने का प्रयास करता रहा है, जो स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उत्पन्न हुए थे। आजादी के बाद भारतीय राजनीति, समाज और संस्कृति में कई बदलाव आए, लेकिन भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों का संरक्षण और प्रसार भी उतना ही महत्वपूर्ण था। भारत की सांस्कृतिक धरोहर, शास्त्रीय कला, साहित्य, संगीत, दर्शन, और भाषा हमेशा से हमारी पहचान का हिस्सा रहे हैं। यह हम सबकी जिम्मेदारी है कि हम अपनी संस्कृति को केवल समझें ही नहीं, बल्कि उसका संरक्षण भी करें। क्योंकि स्वतंत्रता दिवस का अर्थ केवल सत्ता हस्तांतरण तक सीमित नहीं है। 15 अगस्त भारत के आत्म-स्वरूप की पुनर्प्राप्ति का प्रतीक है, जब हम अंग्रेजी शासन से मुक्त हुए। अंग्रेजों की 'डिवाइड एंड रूल' नीति ने हमारी सांस्कृतिक एकता को तोड़ने की पूरी कोशिश की थी। पश्चिमी शिक्षा, धार्मिक मतभेदों को बढ़ावा, और भारतीय आत्मगौरव को नष्ट करने के प्रयासों ने देश को केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी परतंत्र बना दिया था। ऐसे में आज यह अत्यंत आवश्यक है कि हम अपने समाज में छिपी सांस्कृतिक शक्ति को पुनर्जीवित करें। राष्ट्र निर्माण के इस पवित्र कार्य में हर भारतीय को अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए, ताकि हम एक मजबूत और समृद्ध भारत का निर्माण कर सकें।

स्वतंत्रता दिवस हमें यह समझाने का दिन है कि भारतीय संस्कृति के अनमोल रत्नों का संरक्षण करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारी परंपराएं और मान्यताएं आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचें और भारत की पहचान के रूप में बनी रहें। यह हमारे लिए केवल एक ऐतिहासिक कृतज्ञता का दिन नहीं, बल्कि एक निरंतर संघर्ष का प्रतीक है।

स्वतंत्रता दिवस न केवल एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और उन बलिदानियों के प्रति सम्मान और श्रद्धा का भी प्रतीक है, जिन्होंने हमें यह स्वतंत्रता दिलाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। यह दिन भारतीय संस्कृति के उन आदर्शों की पुनः पुष्टि करता है, जो हमें अपने इतिहास और कड़ी मेहनत के माध्यम से प्राप्त हुई हैं। हमें यह याद रखना चाहिए कि स्वतंत्रता सिर्फ एक अधिकार नहीं है, बल्कि यह हमारी जिम्मेदारी भी है। इसलिए, हमें हमेशा अपने राष्ट्र की अखंडता, संस्कृति और मूल्यों की रक्षा करनी चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ियों को भी इसी स्वतंत्रता और सांस्कृतिक धरोहर का अनुभव हो सके। ■

हिन्दू अखंड भारत और स्वतंत्रता दिवस

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की पुन:स्थापना का अवसर

डॉ. रामशंकर 'विद्यार्थी'
सहायक प्रोफेसर,पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
आईआईएमटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, ग्रेटर नोएडा

15 अगस्त को हम हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं, परंतु क्या हमने भारत की उस सांस्कृतिक एकता को पुनः प्राप्त किया है, जिसकी कल्पना हमारे ऋषियों, स्वतंत्रता सेनानियों और विचारकों ने की थी? 'हिंदू अखंड भारत' की अवधारणा आज सिर्फ एक नारा बनकर रह गई है या यह आज भी एक जीवंत राजनीतिक-सांस्कृतिक संकल्प है? इस प्रश्न का उत्तर खोजने का यही सबसे उचित समय है। परामपूज्य डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी ने 'अखंड भारत' की अवधारणा को केवल विचार तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे संगठनात्मक रूप देकर जनचेतना का आधार बनाया। वे कहते थे कि जब तक भारत का समाज सांस्कृतिक रूप से जाग्रत, संगठित और स्वाभिमानी नहीं होगा, तब तक राजनीतिक स्वतंत्रता अधूरी रहेगी।

अखंड भारत केवल एक भौगोलिक अवधारणा नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक चेतना है, जिसकी जड़ें वैदिक युग से लेकर मौर्यकाल, गुप्त काल और स्वतंत्रता संग्राम तक फैली हुई हैं। हिन्दू शब्द यहां धार्मिक सीमाओं को नहीं, बल्कि जीवन पद्धति, सहिष्णुता, और भारतीयता की अभिव्यक्ति करता है। स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंद, डॉ. हेडगेवार और वीर सावरकर जैसे अनेक चिंतकों ने इस विचार को केवल कल्पना नहीं, बल्कि राष्ट्रीय पुनर्जागरण का औजार माना।

15 अगस्त भारत के लिए केवल एक ऐतिहासिक तिथि नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना और स्वतंत्रता की अनुभूति का प्रतीक है। यह दिन हमें न केवल ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से मिली मुक्ति की याद दिलाता है, बल्कि यह प्रश्न भी उठाता है कि क्या हम वास्तव में सांस्कृतिक, वैचारिक और राजनीतिक रूप से स्वतंत्र हो पाए हैं? भारत

की आत्मा में 'अखंड भारत' की संकल्पना निहित है - एक ऐसा भारत जो न केवल भौगोलिक रूप से व्यापक था, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी समरस, समन्वित और आत्मनिर्भर था। वैदिक काल से लेकर मौर्यकाल, गुप्त वंश, और स्वतंत्रता संग्राम तक, यह विचार विभिन्न स्वरूपों में जीवित रहा।

स्वतंत्र भारत में राजनीतिक विमर्श के केंद्र में 'हिंदू अखंड भारत' का विचार एक बार फिर उभर रहा है, किंतु इसके समक्ष कई जटिल राजनीतिक चुनौतियां हैं। पहला, धार्मिक ध्रुवीकरण की राजनीति ने बहुसंख्यक समाज की सांस्कृतिक आकांक्षाओं को बार-बार 'सांप्रदायिकता' कहकर खारिज किया है। दूसरा, संविधान की धर्मनिरपेक्षता और हिंदू सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के बीच कृत्रिम द्वंद रचकर राजनीतिक लाभ लिया गया है। तीसरा, शिक्षा और इतिहास लेखन में लंबे समय तक वामपंथी दृष्टिकोण का वर्चस्व रहा, जिसने भारतीय संस्कृति के गौरव और अखंड भारत के विचार को हाशिये पर डाल दिया। चौथा, पड़ोसी देशों से उत्पन्न संकट - जैसे पाकिस्तान प्रेरित आतंकवाद, बांग्लादेशी घुसपैठ और कश्मीर की अस्थिरता, देश की आंतरिक अखंडता को लगातार चुनौती देते हैं। अंततः, क्षेत्रीय अस्मिताओं की अति-राजनीतिकता ने राष्ट्रीय एकता के भाव को कमजोर किया है।

स्वतंत्रता दिवस के वर्तमान समारोह भी इन अंतर्विरोधों से अछूते नहीं हैं। राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान और स्वतंत्रता सेनानियों की छवियां राजनीतिक मतभेदों का साधन बन चुकी हैं। क्या यह वह स्वतंत्रता है जिसकी कल्पना महर्षि अरविंद, स्वामी विवेकानंद या नेताजी सुभाष ने की थी? अखंड भारत की संकल्पना केवल भूगोल तक सीमित नहीं, बल्कि यह एक सांस्कृतिक धारा है, जो भारत की आत्मा को जीवित रखती है। आज आवश्यकता है कि इस चेतना को पुनः राष्ट्रीय चेतना के केंद्र में लाया जाए।

इसके समाधान में सबसे पहले शिक्षा प्रणाली में सुधार लाना होगा। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस दिशा में एक प्रारंभिक प्रयास है, किंतु इसे केवल पाठ्यक्रम नहीं, बल्कि विचारधारा के स्तर पर लागू करना होगा। इसके अलावा भारत सरकार को एक सांस्कृतिक दिवस घोषित करना चाहिए जो अखंड भारत की स्मृति और उसके भविष्य की आकांक्षा को व्यक्त करे। मीडिया, सिनेमा

और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर राष्ट्रवादी विषयों को प्रोत्साहन देकर जनता के बीच सांस्कृतिक गर्व की भावना पैदा की जा सकती है। पड़ोसी देशों के साथ सांस्कृतिक कूटनीति के माध्यम से एक 'सांस्कृतिक भारत परिषद' बनाई जा सकती है, जिससे अखंड भारत की भावना को शांति और संवाद के माध्यम से साकार किया जा सके।

अखंड भारत की अवधारणा न किसी संप्रदाय के विरोध में है, न किसी राष्ट्र के विरुद्ध। यह भारत की समन्वयवादी परंपरा, सह-अस्तित्व और सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती है। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर यह आवश्यक है कि हम केवल अतीत के बलिदानों को न याद करें, बल्कि भविष्य के लिए एक सशक्त, अखंड और सांस्कृतिक रूप से आत्मनिर्भर भारत का संकल्प भी लें। यही सच्ची स्वतंत्रता होगी - बाह्य नहीं, आंतरिक भी।

कई राजनीतिक चुनौतियां, अखंड भारत के मार्ग में बाधा हैं। देश में बार-बार ऐसे प्रयास हुए हैं जहां बहुसंख्यक हिन्दू समाज की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को 'सांप्रदायिकता' के रूप में पेश किया गया। 'हिंदू राष्ट्र' को संविधान विरोधी घोषित करने की प्रवृत्ति भारतीय संस्कृति की मूल भावना के विपरीत है। शिक्षा और इतिहास की पुस्तकों में भारत के सांस्कृतिक गौरव को उपेक्षित रखा गया। 'अखंड भारत' की अवधारणा को हास्यास्पद बनाकर प्रस्तुत किया गया। पाकिस्तान और बांग्लादेश से आए कट्टरपंथ और घुसपैठ ने भारत की आंतरिक एकता को बार-बार चुनौती दी है।

परमपूज्य डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार भारत की उस राष्ट्रवादी चेतना के अग्रदूत थे, जिन्होंने 'अखंड भारत' की अवधारणा को केवल विचार तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे संगठनात्मक रूप देकर जनचेतना का आधार बनाया। वे मानते थे कि जब तक भारत का समाज सांस्कृतिक रूप से जाग्रत, संगठित और स्वाभिमानी नहीं होगा, तब तक राजनीतिक स्वतंत्रता भी अधूरी रहेगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जब अधिकांश नेतृत्व केवल ब्रिटिश शासन से मुक्ति तक सीमित था, हेडगेवार जी ने भारत की सांस्कृतिक आत्मा की स्वतंत्रता और अखंडता की बात उठाई। 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) की स्थापना करते समय उन्होंने स्पष्ट रूप से यह लक्ष्य रखा कि भारत को पुनः उसके प्राचीन गौरव- एक आत्मनिर्भर, सांस्कृतिक रूप से जागरूक और अखंड राष्ट्र के रूप में स्थापित करना है।

उनका मानना था कि भारत कोई राष्ट्र 'बना' नहीं है, बल्कि वह आदि काल से ही एक जीवंत राष्ट्र रहा है; केवल राजनीतिक गुलामी के कारण वह अपने स्वरूप को खो बैठा है। इसलिए उन्होंने स्वतंत्रता के साथ-साथ स्वत्व और स्वाभिमान को भी उतना ही महत्त्वपूर्ण माना।

अखंड भारत केवल एक भूगोलिक अवधारणा नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक चेतना है, जिसकी जड़ें वैदिक युग से लेकर मौर्यकाल, गुप्त काल और स्वतंत्रता संग्राम तक फैली हुई हैं। हिन्दू शब्द यहां धार्मिक सीमाओं को नहीं, बल्कि जीवन पद्धति, सहिष्णुता, और भारतीयता की अभिव्यक्ति करता है। स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंद, डॉ. हेडगेवार और वीर सावरकर जैसे अनेक चिंतकों ने इस विचार को केवल कल्पना नहीं, बल्कि राष्ट्रीय पुनर्जागरण का औजार माना।

आज जब हम स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 'हिंदू अखंड भारत' की बात करते हैं, तो हेडगेवार जी का योगदान अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। उनका विचार था कि यदि भारत को फिर से विश्वगुरु बनाना है, तो यह कार्य केवल राजनीति या शासन से नहीं होगा, बल्कि समाज के प्रत्येक नागरिक को राष्ट्र के लिए समर्पित होना होगा यही 'संघ निर्माण' की प्रेरणा थी।

अतः अखंड भारत की अवधारणा को व्यवहार में उतारने के लिए हेडगेवार जी का दृष्टिकोण आज भी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और संगठन शक्ति, भारत की अखंडता और आत्मनिर्भरता का आधार हैं।

आज हम देख रहे हैं कि स्वतंत्रता दिवस की भावना कई स्थानों पर सिर्फ झंडारोहण और औपचारिक भाषणों तक सिमट गई है। राष्ट्रध्वज के सम्मान, राष्ट्रगान की गरिमा और राष्ट्रपुरुषों की स्मृति तक पर विवाद खड़े किए जाते हैं। यह खेदजनक है कि जहां एक ओर देश 'विकसित भारत' की ओर बढ़ने की बात करता है, वहीं राष्ट्र की आत्मा यानी अखंड सांस्कृतिक चेतना की उपेक्षा करता है।

उपसंहार : अखंड भारत की भावना न तो किसी राष्ट्र के खिलाफ है, न किसी संप्रदाय के विरुद्ध। यह विचार भारत की आत्मा, संस्कृति और सह-अस्तित्व की पुनर्प्राप्ति का प्रतीक है। स्वतंत्रता दिवस केवल अतीत को याद करने का दिन नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा तय करने का अवसर भी है।

आज जब भारत वैश्विक मंच पर अपनी भूमिका बढ़ा रहा है, तब 'हिंदू अखंड भारत' की भावना एक नैतिक शक्ति बनकर उभर सकती है- बशर्ते हम इसे सिर्फ नारे के रूप में नहीं, राजनीति, शिक्षा, समाज और संस्कृति के केंद्र में लाएं। ■

एक विराट संगठन का छठा महा अभियान

नरेन्द्र भदौरिया
वरिष्ठ पत्रकार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने 100 वर्षों की यात्रा में कई घुमावदार अवरोधों को बड़े कौशल से पार किया है। इस यात्रा में पांच बड़े अभियान बडी कुशलता से पूरे किये हैं। इन सभी को आज महा अभियान माना जा रहा है। इसी कड़ी को आगे जोड़ते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने शताब्दी वर्ष में पंच परिवर्तन के उद्देश्य से पांच सूत्रीय छठवां बड़ा महा अभियान 2025 की विजयादशमी से शुरू करने की तैयारी कर रहा है। यह अभियान भारतीय समाज को नया सबेरा दिखाने वाला सिद्ध होगा। इस अभियान के पांच सूत्र हैं। यह सभी समाज के संकल्प बनें यही उद्देश्य है। इन्हें पंच परिवर्तन नाम मिला है। इनमें प्रथम है हिन्दु समाज में सामाजिक समरसता।दूसरा है कटुम्ब प्रबोधन, तीसरा पर्यावरण संरक्षण, चौथा स्वदेशी जीवन शैली। शताब्दी वर्ष के लिए पांचवां सूत्र है नागरिक कर्तव्यों के प्रति समाज को जाग्रत करना।

संघ के विरोधी भी कहते हैं कि सौ वर्षों में संघ कठिन राहों से सफलता पूर्वक अवरोधों को पार करते आगे बढ़ा है। अब ऐसी स्थिति में खड़ा है कि शताब्दियों से विश्रृंखलित भारतीय समाज को सशक्त क्षमता वाला आदर्श समाज बना सके। संघ कहता रहा है कि भारत का मूल सनातन संस्कृति को समर्पित समाज बंटा तो देश को बांटने वाले सफल होते रहेंगे। संघ ने 100 वर्षों की अपनी यात्रा में इस बात को मिथक सिद्ध कर दिया है कि भारत का हिन्दू समाज अपनी जड़ों से कटता जा रहा है। हिन्दू समाज के रीति रिवाज मान्यताएं और नैतिक सिद्धान्तों के बन्धन ढीले पड़ते जा रहे हैं। ऐसे लोग यह भी कहते हैं कि हिन्दुओं की प्रतिरोधक क्षमता कुन्द पड़ चुकी है। क्योंकि हिन्दू निजी स्वार्थ की सीमाएं बहुत मुश्किल से लांघते हैं। हिन्दुओं को सदा संरक्षण की कमी खटकती रहती है। कुछ समूहों को छोड़कर कोई शक्ति समग्र रूप से हिन्दू समाज का चिन्तन करने की दक्षता का निर्माण नहीं कर सकी।

हिन्दू समाज की इन्हीं दुर्बलताओं का उत्तर है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ। दुर्बलता की इन बातों की अनदेखी संघ ने कभी नहीं की। आर एस एस की स्थापना विजयादशमी के दिन 27 सितम्बर 1925 को नागपुर में हुई थी। सूत्रधार बने थे डॉक्टर केशव बलीराम हेडगेवार। जो स्वतंत्रता के लिए देश में चल रहे आन्दोलनों से जुड़े थे। कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व में उनकी भागीदारी थी। साथ ही क्रान्तिकारी संगठनों के साथ उनके गहरे सम्बन्ध थे, स्वयं भी सक्रिय रहे।। डॉक्टर हेडगेवार के संगठन कौशल के प्रति कांग्रेस और क्रान्तिकारियों के सभी प्रमुख नेताओं को पूरा भरोसा था। सभी उनसे सहमत थे। एक दिन डॉ. हेडगेवार ने मोहनदास गांधी से कहा- बापू देश तो अब स्वतन्त्र होकर रहेगा। तनिक विचार कीजिए कि स्वतन्त्र भारत की रीति नीति क्या होगी। क्या भारत को अपने मूल स्वरुप में लौटाने के लिए कोई योजना बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। भारत को सनातन संस्कृति की धारा में लौटाने के लिए पूरा रोडमैप तैयार नहीं किया गया तो नया भारत कहीं भटकाया जा सकता है। वास्तविक नीति के अभाव में नयी सरकार के रथ के अश्व बहक सकते हैं। डॉ. केशव बलीराम हेडगेवार से बापू ने कहा था आपकी बात तो पते की है। पर अभी यह चिन्तन करने की जल्दी नहीं दिखानी चाहिए। नये भारत का सूरज उगने दीजिए तभी सब कुछ तय हो जाएगा।

समय ने सिद्ध कर दिया कि डॉक्टर हेडगेवार की बात बहुत महत्वपूर्ण थी। गांधी का यह चिन्तन सही नहीं था कि बाद में दिशा तय कर लेंगे। स्वतन्त्रता मिलते ही बाजी गांधी के हाथ से फिसल गयी। जवाहर लाल नेहरु ने गांधी जी को पक्ष में लेकर देश की बागडोर लपक ली। नेहरु ने सनातन संस्कृति से दुराव की नीति अपनायी। नेहरू इस्लाम और ईसाइयत को सनातन संस्कृति की तुलना में अग्रेसर मानने वाले थे। नेहरु प्रारम्भ से ही पश्चिमी जीवन शैली के पोषक नेता थे। हिन्दू चिन्तन से चिढ़ते थे। पश्चिमी जीवन शैली और चिन्तन पर गर्व की अनुभूति करते थे। नेहरु स्वयं को हिन्दू कहने पर लज्जित अनुभव करते थे।

शताब्दी वर्ष 2025 का अद्वितीय महा अभियान : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की जगह

कोई और संगठन होता तो सौ वर्षों की उपलब्धियां दर्शाने के लिए उतावलेपन में क्या करता। बहुत बड़ी रैली करके शक्ति प्रदर्शन करता। अपने नेतृत्व के गुणगान गाने में करोड़ों रुपये व्यय करता। जो सो सब कहता और कहता। जिसका उद्देश्य केवल इतना होता कि हमसे बड़ा कोई नहीं। पर इससे क्या होता? वस्तुतः लोग इतना भर कहते कि चलो, इस या उस पार्टी और नेता के भी पंख निकल आये हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रखर नेतृत्व ने बड़ा संयत और दूरदर्शी निर्णय किया। देश भर में कहीं कोई बड़ी रैली या यात्रा का रेला नहीं, प्रचण्डता दर्शाने वाला कोई शक्ति प्रदर्शन नहीं और देश के सिवाय किसी का महिमा गान नहीं होगा। इस अप्रत्याशित निर्णय से सभी चकित रह गये।

शताब्दी वर्ष 2025 का महा अभियान ग्राम, मण्डल, खण्ड, जिला केंन्द्रों से प्रान्त, क्षेत्र और सम्पूर्ण देश तक पहुंचाया जाना है। करोड़ों कार्यकर्ताओं ,विस्तारकों,प्रचारकों की तपश्चर्या का यह सबसे विराट अभियान है।

इस अभियान का तात्पर्य केवल यह नहीं है कि स्वयंसेवक इन्हें अपनाएंगे। अपितु समाज को सचेत करके इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जाग्रत करेंगे। इस महा अभियान के अन्तर्गत पाँच सूत्र संघ ने सुनिश्चित किये हैं। पहला सामाजिक समरसता, दूसरा कुटुम्ब प्रबोधन, तीसरा पर्यावरण, चौथा स्वदेशी जीवन शैली, पांचवां संकल्प है नागरिक कर्तव्यों के प्रति सजगता ।

(1) **सामाजिक समरसता :** शताब्दी वर्ष 2025 के अपूर्व अभियान के लिए पंच प्रण सबसे पहला सूत्र है। सामाजिक समरसता। इस प्रण की पूर्ति से आर. एस. एस. की बड़ी अपेक्षा जुड़ी है। संघ चाहता है कि भारत का मूल हिन्दू समाज समरसता की जीवन शैली अपनाते हुए विकास यात्रा पर आगे बढ़े। हिन्दुओं के मध्य सामाजिक विषमता के सारे मिथक ध्वस्त हों। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए सामाजिक समरसता का पहला प्रण या कहें संकल्प कार्यकर्ताओं को थमाया गया है।

(2)**कुटुम्ब प्रबोधन-** राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मानना है कि परिवार राष्ट्र संवर्धन की महत्वपूर्ण कड़ी है। भारत में ऋषियों विज्ञजनों द्वारा प्रतिपादित सनातन संस्कृति को परिवार संस्था द्वारा पोषित किया गया। संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत ने सभी स्वयंसेवकों को जिन पांच संकल्पनाओं से जोड़ा है उनमें कुटुम्ब प्रबोधन भी सम्मिलित है। स्वस्थ संस्कार सम्पन्न समाज का निर्माण परिवार करते हैं। सुव्यवस्थित, सशक्त परिवार ही पुष्ट समाज के आधार होते हैं। कुटुम्ब व्यवस्था के चलते सदा राष्ट्र बलवान बनता है। यह सन्देश सनातन संस्कृति का है। संघ 2025 के विजय दशमी उत्सव के साथ पूरे वर्ष भारत के जन जन तक इस विचार को पहुंचाएगा।

प्रबोधन का अर्थ जाग्रत करने से है। किसी सत्य की ओर सचेष्ट करने को प्रबोधन कहते हैं। भारत में सामाजिक व्यवस्था सदा सुदृढ रही है। इस व्यवस्था को अनिवार्य मानते हुए समाज को जाग्रत करने की संकल्पना संघ की है। समाज सचेत होगा तो परिवार कुटुम्ब सशक्त होंगे। जन जन की जागृति से इस व्यवस्था में आने वाले रोड़े हट जाएंगे। यह बदलते परिवेश के लिए भी अनिवार्य और उपयोगी है। सभी कुटुम्बी जन दूरस्थ स्थानों पर रहते हुए अपने पारिवारिक सूत्रों में गुम्फित रह कर सशक्त बने रह सकते हैं। यही चेतना जगाने को संघ उद्यत है।

संघ के विचारकों का कहना है कि भारत की समाजिक संरचना का विवेचन करने वाले विज्ञ जनों का यह निष्कर्ष सही है कि मूल्यों में गिरावट आने से परिवार और समाज को कई तरह के दबावों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। संघ ने 2016 में भी पूरे वर्ष कुटुम्ब प्रबोधन पर ध्यान आकृष्ट किया था। जाग्रति का अभियान चलाकर सामाजिक चेतना को पुष्ट करना होगा।

(3) **पर्यावरण संवर्धन :** पर्यावरण संवर्धन कोई नयी संकल्पना नहीं है। संघ के स्वयंसेवक पर्यावरण संवर्धन की चेतना को जगाने के लिए मुखर होने के साथ स्वयं भी शताब्दी वर्ष में इस प्रण को निभाएंगे। मनुष्य का स्वभाव है कि जब कभी संकल्प को अपने प्रण से जोड़ लेता है तो सारे तर्क वितर्क समाप्त हो जाते हैं। तब कर्तव्य पथ स्पष्ट दिखने लगता है। यह जागरण संघ के समस्त स्वयंसेवक समाज से मिलकर शताब्दी वर्ष में करेंगे।

(4) **नागरिक कर्तव्य :** नागरिक कर्तव्य सभी के आचरण और जीवन शैली का अंग बनने चाहिए। समाज की जागरूकता से नागरिक व्यवस्थाएं सुदृढ होती हैं। तनिक सोचिये कि गाँव नगर बस्ती का कोई सदस्य जब कभी बाहर निकले मार्ग पर चलने के नियमों का पालन करे तो कितना अच्छा लगेगा। हर व्यक्ति स्वच्छता की अनिवार्यता से स्वयं को जोड़कर व्यवहार करें, स्वयं की सुविधा के लिए किसी को कष्ट पहुंचाने से बचे तो कैसा लगेगा। ऐसा नहीं कि लोगों को नागरिक कर्तव्यों की जानकारी नहीं होती। बस मन का आग्रह सुदृढ नहीं होता। इसके प्रति सचेत करने से बात बनेगी।

(5) **स्वदेशी जीवन शैली :** स्वदेशी जीवन शैली अपनाने का आग्रह कोई नया विषय नहीं है। जब संसार के अन्य भूभागों में विकास का सूर्य ठीक से उगा भी नहीं था तब भारत समुन्नत था। विज्ञान तकनीक, व्यापार, कृषि, उद्यम हर क्षेत्र में अग्रणी था। संसार के लोग चमत्कृत थे कि भारत ने हर क्षेत्र में इतनी उन्नति कैसे कर ली। भारत के 140 करोड़ नागरिको में जिस दिन स्वदेशी जीवन शैली का भाव जाग उठेगा भारत के महाशक्ति बनने के सारे अवरोध हट जाएंगे। स्वदेशी जीवन शैली का अर्थ केवल स्वदेशी उत्पादों की ग्राह्यता भर नहीं है। यह भी एक सोपान है। इसके साथ अपनी संस्कृति, सभ्यता, संस्कारों को जीवन पद्धति में सम्मिलित करना उद्देश्य होगा तब राष्ट्र की शक्ति को संसार पहचानेगा।

संघ कहता है संगठित रहो, शुद्ध आचरण से बंधकर चलो। शौर्य के सुबल को धारण किये रहो। देव शक्तियों की यही प्रेरणा रही है। को कभी नहीं ऐसे मंत्रों को कभी भूलना नहीं चाहिए। भारत के समस्त घटक राष्ट्र प्रथम के संकल्प से जुड़े रहें साथ ही पांच सूत्रों को सदा सुमिरन में बनाये रहें। यही उद्देश्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का है। संघ के सदस्य जगाने निकलेंगे। देश का जन मानस इन संकल्पों को अपनाएगा। इसी पुनीत धारणा को संघ ने मंत्र माना है। इस माह अभियान का यही प्राण तत्व है। ■

शताब्दी वर्ष
संकल्प पथ पर उन्नत होते जा रहे स्वयंसेवक

1925 में उपेक्षा, विरोध और साधनों के अभाव में उदित हुआ संघ, न केवल आज देश के कोने-कोने में पहुंच चुका है, बल्कि विविध क्षेत्रों और आयामों में अपना कार्य विस्तार कर रहा है। यह अनायास होने वाला कार्य नहीं है बल्कि यह उस निष्ठा और कार्यपद्धति का परिणाम है जो कर्तृत्व, अपनत्व और शील के आधार पर समाज का विश्वास जीतने में सफल रही।

डॉ. प्रताप निर्भय सिंह
शोध प्रमुख, प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा

संघ यात्रा की अपनी इस श्रृंखला में हम आ पहुंचे हैं अपने दसवें पड़ाव पर। यह संघ यात्रा का दसवां दशक है जो संघ के शताब्दी वर्ष पर जाकर सम्पन्न हो रहा है। एक शताब्दी की यात्रा में संघ के निरंतर उत्थान और विस्तार को समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में देखा जाने लगा है। संघ के लाखों स्वयंसेवक पूर्ण निष्ठा से उस संकल्प को लेकर आगे बढ़ रहे हैं जिसे परम पूजनीय डॉ. हेडगेवार ने सौंपा था। आइये चलते हैं इस दशक की यात्रा पर-

1 मार्च, 2015 को हरियाणा प्रांत के रोहतक में तरुणोदय शिविर का आयोजन किया गया। जून 2015 में कर्नाटक दक्षिण प्रांत का 'ग्राम संगम' बंगलुरु के निकट आयोजित किया गया। संघ समय के साथ चलता है इस दृष्टि से संघ के गणवेश में समयानुकूल परिवर्तन हुआ। मार्च 2016 में नागपुर में आयोजित अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक में औपचारिक स्तर पर संघ के गणवेश परिवर्तन का निर्णय लिया गया। विजयादशमी (11 अक्टूबर 2016) को संघ के गणवेश में खाकी हाफ पैंट की जगह ब्राउन कलर की फुल पैंट ने ले ली। जनवरी 2016 में बेंगलुरु में पहला श्रृंग शिविर "स्वरांजलि" आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में देश के हर क्षेत्र से कुल 2195 स्वयंसेवकों ने भाग लिया।

मार्च 2016 की प्रतिनिधि सभा में ही दैनन्दिन जीवन में समरसतापूर्ण व्यवहार करने का प्रस्ताव भी पारित किया गया। 2017 की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा में पश्चिम बंगाल में जिहादी तत्वों के निरन्तर बढ़ रहे हिंसाचार, राज्य सरकार द्वारा मुस्लिम वोट-बैंक की राजनीति के चलते राष्ट्र-विरोधी तत्वों को दिये जा रहे बढ़ावे तथा राज्य में घटती हिन्दू जनसंख्या के प्रति, गहरी चिन्ता व्यक्त की गयी। जनवरी, 2018 में कोंकण प्रान्त में हिन्दू चेतना संगम आयोजित हुआ। एक ही दिन प्रांत के सभी खंडों तथा नगरों में तरुण स्वयंसेवकों का गणवेष में एकत्रीकरण हुआ। कुल 255 स्थानों पर एकत्रीकरण में 34,448 स्वयंसेवक उपस्थित रहे। कार्यक्रम में अन्य 48,814 पुरुष एवं 24,268 महिलाओं की भी उपस्थिति रही। इसी वर्ष बहियारा (आरा, बिहार) में जगद्गुरु रामानुजाचार्य सहस्राब्दी समापन हुआ और इसी वर्ष भगिनी निवेदिता की 150 जयंती निमित्त देश भर में कार्यक्रम आयोजित किये गये। मार्च 2018 की प्रतिनिधि सभा में भारतीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्द्धन की आवश्यकता पर मंथन हुआ।

मार्च 2019 की प्रतिनिधि सभा की बैठक में शबरीमला देवस्थान को लेकर वामपंथियों द्वारा खड़े किये गये विवाद के विषय में मंथन हुआ। वर्तमान परिस्थितियों में परिवार व्यवस्था के समक्ष चुनौतियों पर भी चर्चा की गयी। सभी लोग देश में होने वाली मतदान प्रक्रिया में भाग लें और चुनाव में 100

प्रतिशत मतदान हो, इस के लिए स्वयंसेवकों ने समाज में जनजागरण किया। उत्तर प्रदेश सरकार और विभिन्न पीठों के सहयोग से प्रयागराज कुंभ में (वैचारिक कुंभ के माध्यम से) कई नए प्रयोग किए गए। इनमें युवा कुंभ, मातृशक्ति कुंभ, समरसता कुंभ, पर्यावरण कुंभ एवं सर्वसमावेशी कुंभ वैचारिक आदान-प्रदान की दृष्टि से बहुत प्रभावी रहे। इस वर्ष सक्षम के माध्यम से शारीरिक, मानसिक रूप से अक्षम लोगों के लिए विभिन्न आयोजन किए गए। जिनमें नेत्र कुंभ के दौरान 800 से ज्यादा विशेषज्ञों ने 2 लाख से अधिक लोगों का परीक्षण कर रिकार्ड बनाया। साथ ही डेढ लाख लोगों को निःशुल्क चश्में उपलब्ध कराए गए। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा ने भारतीय परिवार व्यवस्था को सुदृढ़ करने का आह्वान करते हुए प्रस्ताव पारित किया, जिसमें कहा गया है कि भारतीय परिवार व्यवस्था हमारे समाज का मानवता के लिए अनमोल योगदान है। हम अपने दैनन्दिन व्यवहार व आचरण से यह सुनिश्चित करें कि हमारा परिवार जीवनमूल्यों को पुष्ट करने वाला, संस्कारित व परस्पर संबंधों को सुदृढ़ करने वाला हो। सपरिवार सामूहिक भोजन, भजन, उत्सवों का आयोजन व तीर्थाटन, मातृभाषा का उपयोग, स्वदेशी का आग्रह, पारिवारिक व सामाजिक परम्पराओं के संवर्धन व संरक्षण से परिवार सुखी व आनंदित होंगे। परिवार व समाज परस्पर पूरक हैं। प्रस्ताव में मातृशक्ति के सम्बन्ध में कहा गया कि, "हमारी परिवार व्यवस्था की धुरी माँ होती है। मातृशक्ति का सम्मान करने का स्वभाव परिवार के प्रत्येक सदस्य में आना चाहिए। सामूहिक निर्णय हमारे परिवार की परंपरा बननी चाहिए। परिवार के सदस्यों में अधिकारों की जगह कर्तव्यों पर चर्चा होनी चाहिए। प्रत्येक के कर्तव्य-पालन में ही दूसरे के अधिकार निहित हैं। कालक्रम से अपने समाज में कुछ विकृतियां व जड़ताएं समाविष्ट हो गई हैं। दहेज, छुआछूत व ऊँच-नीच, बढ़ते दिखावे एवं अनावश्यक व्यय, अंधविश्वास आदि दोष हमारे समाज के सर्वांगीण विकास की गति में अवरोध उत्पन्न कर रहे हैं। प्रतिनिधि सभा ने सम्पूर्ण समाज से आग्रह किया कि अपने परिवार से प्रांरभ कर, इन कुरीतियों व दोषों को जड़मूल से समाप्त कर एक संस्कारित एवं समरस समाज के निर्माण की दिशा में कार्य करें।

इस वर्ष आजाद हिन्द सरकार के 75 वर्ष पूर्ण होने पर देशभर में विविध कार्यक्रम आयोजित किये गये। इसी वर्ष जलियांवाला बाग के प्रेरणादायी बलिदान के शताब्दी वर्ष पर बलिदान की गाथा स्वयंसेवकों ने देश के प्रत्येक कोने तक पहुंचाई। इसी वर्ष श्री गुरु नानकदेव जी का 550वां प्रकाश पर्व पूरे देश में मनाया गया, संघ के स्वयंसेवकों ने भी अनेक स्थानों पर कार्यक्रमों का आयोजन कर

एक शताब्दी की यात्रा में संघ के निरंतर उत्थान और विस्तार को समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में देखा जाने लगा है। संघ के लाखों स्वयंसेवक पूर्ण निष्ठा से उस संकल्प को लेकर आगे बढ़ रहे हैं जिसे परम पूजनीय डॉ. हेडगेवार ने सौंपा था।

गुरु नानक देव जी के सन्देश को जन-जन तक पहुंचाया।

इस वर्ष पूरा विश्व एक आपदा की चपेट में आया जिसका नाम था कोविड-19, इस महामारी ने पूरे विश्व को संकट में डाल दिया था। इस भीषण संकट काल में संघ के स्वयंसेवकों ने जिस सेवा-भाव, अनुशासन और समर्पण का परिचय दिया, उसने न केवल देशवासियों का, बल्कि वैश्विक समुदाय का भी ध्यान आकर्षित किया। कोविड के दौरान शिक्षा क्षेत्र में विद्यालय बंद रहने के कारण छात्रों का विकास प्रभावित हुआ, रोजगार की समस्या भी पैदा हुई। ऐसे समय में संघ के स्वयंसेवकों ने योजनाबद्ध रूप से स्थानीय स्तर पर कार्य किया। कोरोना के कारण बदली परिस्थितियों में लाखों स्वयंसेवक स्वास्थ्य, चिकित्सा, शिक्षा और स्वावलंबन से जुडी गतिविधियों में बड़े स्तर पर जुटे।

वर्ष 2022 में स्वाधीनता के अमृत महोत्सव की वेला पर स्वयंसेवकों ने अपने महापुरुषों और स्वतंत्रता सेनानियों को नमन करते हुए उनके सपनों के भारत का निर्माण करने के अपने संकल्प को गति दी। मार्च 2022 को कर्णावती में सम्पन्न हुई अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक में मानव केंद्रित, पर्यावरण के अनुकूल, श्रम प्रधान तथा विकेंद्रीकरण एवं लाभांश का न्यायसंगत वितरण करने वाले भारतीय आर्थिक प्रतिमान पर मंथन हुआ। स्वदेशी, ग्रामीण अर्थव्यवथा, सूक्ष्म उद्योग, लघु उद्योग और कृषि आधारित उद्योगों को संवर्धित किये जाने जैसी गतिविधियों में स्वयंसेवकों की भूमिका पर चिंतन हुआ। तीव्रता से बदलती आर्थिक तथा तकनीकी परिदृश्य की वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए नवोन्मेषी पद्धतियाँ खोजने, उभरती डिजिटल अर्थव्यवस्था एवं निर्यात की संभावनाओं से उत्पन्न रोजगार और उद्यमिता के अवसरों का गहन अन्वेषण करने, रोजगार के पूर्व और दौरान मानव शक्ति के प्रशिक्षण, अनुसन्धान तथा तकनीकी नवाचार, स्टार्ट अप और हरित तकनीकी उपक्रमों आदि के प्रोत्साहन में सहभागिता जैसे महत्वपूर्ण विषयों को केंद्र में रखकर भारत की भूमिका को लेकर मंथन हुआ।

मार्च 2023 में शताब्दी वर्ष 2025 तक नए लोगों को संघ से जोड़ने पर मंथन हुआ। शाखा संघ की रीढ़ और सामाजिक परिवर्तन का केंद्र है। शाखा के स्वयंसेवक सामाजिक परिस्थितियों के अध्ययन के आधार पर विषयों का चयन करते हैं और समाज परिवर्तन के लिए कार्य करते हैं। समाज को स्वावलंबी बनाने, सेवा कार्यों के विस्तार, समाज में सामाजिक समरसता का वातावरण बनाने, पर्यावरण संरक्षण, अमृतकाल के तहत देशभर में क्या कार्य किए जाएं, ये सभी विषय शाखा के माध्यम से स्वयंसेवकों द्वारा समाज में चलाए जाते हैं। प्रत्येक गाँव प्रत्येक मंडल तक

शाखा का विस्तार हो इस पर भी विमर्श हुआ। इसी वर्ष भगवान महावीर स्वामी के 2550 वें निर्वाण वर्ष पर विशेष वक्तव्य जारी किये गये।

2024 में महर्षि दयानंद सरस्वती की 200 वीं जयंती के अवसर पर पूरे देश में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये। छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के 350 वर्ष पूरे होने पर सम्पूर्ण देश में कार्यक्रम आयोजित किये गये। 22 जनवरी को अयोध्या में श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा से पूरे देश में उत्साह और आनंद का वातावरण बना। राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह में स्वागत के लिए राम मंदिर ट्रस्ट की ओर से देश भर में अक्षत निमंत्रण कार्यक्रम चलाया गया। इस अवसर पर पूरे देश में अयोध्या धाम में पूजित अक्षत वितरण और श्री राम मंदिर के भव्य उद्घाटन के अवसर पर उत्सव निमन्त्रण हेतु लाखों स्वयंसेवक घर-घर गये।

मार्च 2024 नागपुर की प्रतिनिधि बैठक में संघ स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों और योजना पर विचार मंथन किया गया। शताब्दी वर्ष के निमित्त कार्य - विस्तार की दृष्टि से 1 लाख शाखा का लक्ष्य रखा गया। समाज हित में पंच परिवर्तन- सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, पर्यावरण, 'स्व' एवं नागरिक कर्तव्य का समावेश कर संघ ने शताब्दी वर्ष में पंच परिवर्तन के माध्यम से जन-जन की सहभागिता द्वारा समाज जागरण का संकल्प लिया। इसी वर्ष पुण्य श्लोक लोकमाता अहिल्याबाई होलकर के जन्म की त्रि-शताब्दी पूरे देश में मनाई गयी, विभिन्न शैक्षिक एवं सामजिक संस्थानों में कार्यक्रम आयोजित कर उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को नई पीढ़ी तक पहुंचाया गया।

तीर्थराज प्रयाग में आयोजित महाकुम्भ ने पूरे देश के सांस्कृतिक गौरव और आत्मविश्वास को बढ़ाया। महाकुम्भ ने भारत की आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक विरासत के अद्भुत दर्शन कराए और साथ ही समाज की आंतरिक श्रेष्ठता का बोध कराया। महाकुम्भ की विविध गतिविधियों में संघ के स्वयंसेवक जुटे रहे। सक्षम द्वारा आयोजित नेत्र कुम्भ में महाकुम्भ में आने वाले लोगों के लिए निःशुल्क नेत्र परीक्षण, चश्मे का वितरण तथा आवश्यकता पड़ने पर मोतियाबिंद की सर्जरी की व्यवस्था की गई। निःशुल्क नेत्र परीक्षण से 2,37,964 लोगों ने लाभ उठाया, जबकि 1,63,652 लोगों को निःशुल्क चश्में तथा 17,069 लोगों ने निःशुल्क मोतियाबिंद की सर्जरी करवाई। 53 दिनों तक चले सेवा कार्य में 300 से अधिक नेत्र विशेषज्ञों तथा 2800 कार्यकर्ताओं ने काम किया। पर्यावरण संरक्षण गतिविधि में स्वयंसेवकों ने कुम्भ को थर्मोकोल प्लेट या पॉलीथिन बैग मुक्त बनाने के लिए अनेक संगठनों के सहयोग से "एक थाली-एक थैला अभियान" चलाया। अभियान के तहत देशभर में स्टील की प्लेट तथा कपड़े के थैलों का बड़ी संख्या में संग्रह किया गया। कार्यकर्ताओं ने 2241 संस्थाओं के सहयोग से 7258 केंद्रों पर कुल 14,17,064 प्लेटें और 13,46,128 थैले एकत्रित किए, जिन्हें कुम्भ के विभिन्न पंडालों में वितरित किया गया। यह अभियान अपने आप में एक अनूठा प्रयोग था और पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने तथा स्वच्छ कुम्भ के विचार को जन-जन तक पहुंचाने में सफल रहा।

2024-27 के कार्यकाल हेतु संघ की नई कार्यकारिणी में छह सह सरकार्यवाह श्री कृष्ण गोपाल जी, श्री मुकुंद जी, श्री अरुण कुमार जी, श्री रामदत्त चक्रधर जी, श्री अतुल लिमये जी, श्री आलोक कुमार जी नियुक्त हुए। संघ स्थापना का यह 100 वां वर्ष है। वार्षिक प्रतिवेदन के अनुसार 51,570 स्थानों पर प्रतिदिन कुल 83,129 शाखाएं संचालित की जाती हैं। कुल मिलन (साप्ताहिक) 32,147, कुल मंडली (मासिक) 12,091 हैं।

संघ अपने शताब्दी वर्ष के दौरान कार्य के विस्तार की दिशा में काम कर रहा है, उसमें ग्रामीण मंडलों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर रहा है। संघ ने संगठनात्मक योजना के तहत देश को 58,981 ग्रामीण मंडलों में विभाजित किया है, जिनमें से 30,717 मंडलों में दैनिक शाखाएं और 9,200 मंडलों में साप्ताहिक मिलन चल रहे हैं। शताब्दी वर्ष हेतु पूज्य सरसंघचालक जी के आह्वान पर संघ कार्य के विस्तार और सुदृढ़ीकरण के लिए 2,453 स्वयंसेवकों ने दो वर्ष हेतु स्वयं को समर्पित किया। इस वर्ष देश भर में कुल 4,415 प्रारंभिक वर्ग आयोजित किए गए। इन वर्गों में 2,22,962 स्वयंसेवक शामिल हुए, जिनमें से 1,63,000 स्वयंसेवक 14–25 आयु वर्ग और 20,000 से अधिक स्वयंसेवक 40 वर्ष से अधिक आयु के थे। संघ की वेबसाइट (www.rss.org) पर ज्वाइन आरएसएस के माध्यम से साल 2012 से अब तक 12,72,453 से अधिक लोगों ने संघ से जुड़ने में रुचि दिखाई है, जिनमें से 46,000 से अधिक महिलाएं हैं। ऐसी हजारों महिला कार्यकर्ता विभिन्न क्षेत्रों में संघ की विभिन्न गतिविधियों में कार्य कर रही हैं। वर्तमान में देशभर में कुल 89,706 सेवा गतिविधियां चल रही हैं, जिनमें से 40,920 शिक्षा के क्षेत्र में, 17461 चिकित्सा सेवा से संबंधित, 10,779 स्वावलंबन के क्षेत्र में तथा 20,546 सामाजिक जागरण से संबंधित गतिविधियां हैं। सामाजिक समरसता के अंतर्गत 1084 स्थानों पर हमारे स्वयंसेवकों ने मंदिरों में प्रवेश पर प्रतिबंध तथा एक ही स्रोत से पीने का पानी लेने पर रोक जैसी गलत सामाजिक प्रथाओं को समाप्त करने का प्रयास किया।

1925 में उपेक्षा, विरोध और साधनों की अनुपस्थिति में जन्मा संघ, न केवल आज देश के कोने-कोने में पहुंच चुका है, बल्कि विविध क्षेत्रों और आयामों में अपना कार्य विस्तार कर रहा है। यह अनायास होने वाला कार्य नहीं है बल्कि यह उस निष्ठा और कार्यपद्धति का परिणाम है जो कर्तृत्व, अपनत्व और शील के आधार पर समाज का विश्वास जीतने में सफल रही। संघ की सौ वर्षों की यात्रा केवल इतिहास नहीं, भविष्य की संभावनाओं की नींव है। आज, जब भारत 'विकसित राष्ट्र' बनने की आकांक्षा के साथ 2047 की ओर अग्रसर है, तब स्वयंसेवक भी राष्ट्र के परम वैभव के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करते हुए ध्येयनिष्ठा से सतत् आगे बढ़ रहे हैं। ■

संघ शताब्दी वर्ष
सांस्कृतिक पुनर्जागरण का नूतन पर्व

डॉ. प्रदीप कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

शुद्ध सात्विक प्रेम एवं एकात्म भाव संघ कार्य का आधार है। आत्मीयता से पल्लवित और पुष्पित परंपरा पर चलता हुआ, लाखों करोड़ों लोगों में देशभक्ति एवं देश प्रेम का भाव जगा रहा है, चुन-चुन कर उन्हें राष्ट्र के नवोत्थान में लगा रहा है। वर्तमान समय में जहाँ विश्व क्षेत्रवाद, भाषावाद और नस्लवाद से जूझ रहा है वहीं संघ समरसता का भाव जगाकर, सभी प्रकार के भेद मिटाता हुआ समस्त विश्व को एकात्म भाव का सन्देश दे रहा है। 1925 की विजयदशमी को मुट्ठीभर सदस्यों से प्रारंभ हुआ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अनेक संकटों, प्रतिबंधों और प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करता हुआ आज एक विराट स्वरुप ग्रहण कर चुका है। राष्ट्र सर्वोपरि के संकल्प से पोषित होकर संघ आगामी विजयदशमी पर अपने 100 वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है, यानी संघ अब 100 वर्ष का हो जाएगा। अपनी इन 100 वर्षों की यात्रा को स्वयंसेवक संघ शताब्दी वर्ष के रूप में बड़े उत्साह के साथ मनाने की तैयारी कर रहे हैं। लाखों स्वयंसेवक कार्यकर्ताओं को इसके लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है, जिनके माध्यम से संघ समाज के सभी वर्गों के अंतिम व्यक्ति के घर-घर जाकर अपने संदेश को पहुंचाने की तैयारी कर रहा है। संघ कार्यकर्ताओं के साथ ही जन-जागरण के माध्यम से लाखों भारतीयों को इस कार्य में लगाने की योजना बना रहा है। उसके प्रत्येक कार्यकर्ता में उत्साह है, उमंग है, वह गर्व से कह रहा है कि आज मैं विश्व के सबसे बड़े सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन का सदस्य हूं। प्रत्येक स्वयंसेवक तन मन धन समर्पित कर अपने संगठन की शताब्दी वर्ष को कार्य विस्तार के संकल्प के साथ उत्साहपूर्वक मनाने के लिए तैयार हो रहा है।

आज राष्ट्रीय ही नहीं अपितु अंतरराष्ट्रीय समुदाय भी विश्व के सबसे बड़े अनुशासित संगठन की गतिविधियों की ओर आशा भरी दृष्टि से देख रहा है। आखिर इस संगठन की कार्य पद्धति में ऐसा क्या है कि पिछले 99 वर्षों में अनगिनत बाधाओं को पार कर आज भी संघ अपने यौवन और शक्ति के साथ दृढ़ता से राष्ट्रनिर्माण में जुटा है? स्वतंत्रता से पूर्व एवं बाद में अनेक संगठन बने, बढ़े, और विकसित हुए परन्तु समय के साथ समाप्त हो गए पर संघ आज बीज से वृक्ष बनकर देश की प्रगति में अपनी अग्रणी भूमिका निभा रहा है। ऐसे में इस संगठन की रीति-नीति, परंपरा, कार्य पद्धति आदि पर न केवल विश्लेषण की आवश्यकता है अपितु गहन शोध और अध्ययन की भी आवश्यकता है। इस संदर्भ में संघ की इस लंबी यात्रा के कुछ पड़ावों पर दृष्टि डालना उचित होगा। संघ संस्थापक युगदृष्टा क्रांतिकारी डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने संघ को देश की राष्ट्रीय आवश्यकता कहा था। उन्होंने कोलकाता में क्रांतिकारियो के साथ और नागपुर में रहते हुए कांग्रेस के साथ काम किया, पर संघ स्थापना के बाद उन्होंने अपनी पूरी शक्ति संगठन के लिए लगा दी। इसीलिए पहले 50 साल संघ ने केवल संगठन किया। सुप्रसिद्ध विचारक एवं वरिष्ठ संघ प्रचारक दत्तोपंत ठेंगड़ी इसे 'प्रोग्रेसिव अनफोल्डमेंट' कहते थे। इसके बल पर ही संघ ने हर संकट का सामना किया। इस पहले दौर में स्वयंसेवकों ने समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से जुडी अनेक संस्थाएं बनाई। इनमें नारी उत्थान के क्षेत्र में संघ प्रेरणा से 1936 में राष्ट्र सेविका समिति स्थापित हुई, विद्यार्थीयों के मध्य अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद 1949 में, वनवासी व जनजातीय क्षेत्र में बनवासी कल्याण आश्रम 1952 में, भारतीय मजदूर संघ 1955 में, विश्व हिंदू परिषद 1964 में, भारतीय जन संघ 1951 में (बाद में भारतीय जनता पार्टी 1980) और सरस्वती शिशु मंदिर/विद्या भारती 1952 में स्थापित हुई प्रमुख संस्थाएं हैं।

संघ पर 1932 और 1940 में अंग्रेजी शासन ने आंशिक प्रतिबंध लगाए, पर वे ज्यादा नहीं टिके। 1948 में गांधी जी की हत्या के बाद संघ पर स्वतंत्र भारत की सरकार ने गांधी हत्या का मिथ्या आरोप लगाकर प्रतिबंध लगाया। जो न्यायालय में निर्मूल सिद्ध हुआ। वास्तव में गांधी जी की हत्या का बहाना लेकर यह संघ की बढती शक्ति को कुचलने का एक राजनीतिक षड्यंत्र था। प्रचार माध्यम सरकार के पास थे, संघ के पास अपनी बात कहने का कोई साधन नहीं था। फिर भी संघ ने अपने सत्याग्रह से सरकार को झुका दिया और संघ पहले से भी अधिक शक्ति के साथ आगे बढ़ने लगा। हजारों समर्पित कार्यकर्ताओं की निष्ठापूर्ण सक्रियता से शाखा के साथ ही समवैचारिक संगठनों का विस्तार और प्रभाव भी बढ़ने लगा। इसलिए जब 1975 में सत्ता के मद में चूर तत्कालीन प्रधानमन्त्री इंदिरा गांधी

ने आपातकाल घोषित करके संघ पर प्रतिबंध लगाया, तो संघ ने लोकतंत्र की इस हत्या के विरुद्ध कमर कस ली। इस बार जनता भी संघ के साथ खड़ी थी। लोकतंत्र की रक्षा के लिए आम जनता ने इस जनांदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संघ के हजारों स्वयंसेवकों ने जेलों में अमानवीय यातनाएँ सही, किन्तु उनका संकल्प नहीं डगमगाया। थक हारकर सरकार को आपातकाल वापस लेना पड़ा। और चुनाव में जनता का आक्रोश फूट पड़ा इंदिरा गांधी की इस चुनाव में शर्मनाक हार हुई, यह लोकतंत्र की जीत थी। समाज में बढ़ती स्वीकार्यता का संबल लेकर संघ ने संगठन का विविध क्षेत्रों में विस्तार किया तथा स्वयंसेवकों ने अनेक नई संस्थाएं बनाई। 1992 में बाबरी ढाँचे के विध्वंस के बाद सरकार ने पुनः संघ पर प्रतिबंध लगाया, जिसे न्यायालय ने ही खारिज कर दिया। 1975 और 1992 के प्रतिबंधों से संघ के संगठन और प्रभाव में वृद्धि ही हुई है। आज वैश्विक पटल पर संघ का नाम सबसे बड़े सांस्कृतिक संगठन के रूप में अंकित है।

साल 1977 के बाद के समय को हम संघ का दूसरा कालखंड कह सकते हैं। इस समय संघ ने अनुभव किया कि समाज के निर्धन वर्ग को सबसे अधिक सेवा की आवश्यकता है, उनकी पहली जरूरत रोटी, कपड़ा और मकान है। इस कारण लोग लालच में आकर मतान्तरण (कन्वर्जन) तक कर लेते हैं। मीनाक्षीपुरम धर्मांतरण कांड इसका सबसे बड़ा और चर्चित उदाहरण था। इसीलिए समाज के अपने ऐसे वंचित बन्धु-बांधवों की सेवा के लिए इस क्षेत्र में प्रवेश किया गया। 1989 में डॉ. हेडगेवार की जन्म शताब्दी पर देश भर से सेवा निधि एकत्र कर हजारों पूर्णकालिक कार्यकर्ता बनाए गए। निर्धन बस्तियों को सेवा बस्ती नाम देकर उनमें शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के छोटे-छोटे प्रकल्प शुरू किए गए। आज ऐसे प्रकल्पों की संख्या डेढ़ लाख से भी अधिक है। भारत के पूर्वोत्तर के राज्यों में इन कार्यों का स्पष्ट परिणाम दिखाई दे रहा है। आज संगठन द्वारा सैंकड़ों बड़े प्रकल्प भी संचालित किये जा रहे हैं, पर मुख्य ध्यान छोटी इकाइयों पर है। केवल संघ ही नहीं आज सभी समवैचारिक संस्थाएं सेवा कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

1947 में देश विभाजन एक बड़ी चुनौती थी। इस दौरान पंजाब और सिंध में संघ ने सीमित शक्ति के बावजूद लाखों हिंदुओं की रक्षा की, महिलाओं की लाज बचाई और उनका पुनर्स्थापन किया। बंगाल में शक्ति कम होने से यह कार्य प्रभावी ढंग से नहीं हो सका। 1950 में संघ से प्रतिबंध हटने पर कुछ लोगों का विचार था कि निर्दोष होते हुए भी संसद या किसी विधानसभा में कोई हमारे पक्ष में नहीं बोला अतः हमें शाखा छोड़कर केवल राजनीति करनी चाहिए। तत्कालीन सरसंघचालक पूज्य श्री गुरु जी ने कहा कि राजनीति जरूरी होते हुए भी सब कुछ नहीं है। यद्यपि संघ ने राजनीति में कई कार्यकर्ताओं को भेजा और यह क्रम आज भी जारी है। हिंदुत्व के मूल्यों पर बनी पार्टी में उन कार्यकर्ताओं ने खूब सहयोग किया और आज भी कर रहे हैं। 1968 में दीनदयाल उपाध्याय जी का निधन हो गया अतः भारतीय जनसंघ के कार्यकर्ता, अटल बिहारी वाजपेयी को नेतृत्व में लाना चाहते थे। इससे रूष्ट होकर श्री बलराज मधोक ने पार्टी छोड़ दी पर वे जल्दी ही समझ गए कि कुछ लोग कुछ समय के लिए कोई संस्था तो चला सकते हैं पर संगठन नहीं।अतः वे क्रोध को भुलाकर फिर से संघ कार्य में सक्रिय हो गये। संघ में व्यक्ति नहीं संगठन महत्वपूर्ण है। ऐसी ही एक चुनौती 2018 में विश्व हिंदू परिषद में आई और एक प्रभावी कार्यकर्ता ने अपनी नई संस्था बना ली। यहां भी टकराव व्यक्ति और संगठन में ही था। किन्तु संघ में व्यक्तिनिष्ठा नहीं अपितु समाज निष्ठा, राष्ट्र निष्ठा और संगठन के प्रति समर्पण ही सर्वोपरि है। यही कारण है कि जहाँ संघ स्थापना के आस-पास पनपे अनेक संगठन आज दम तोड़ चुके हैं वहीं संघ अपनी गरिमा के साथ उदयमान और प्राणों से स्पंदित है।

50 साल संगठन और 50 साल विस्तार के बाद अब संघ समाज परिवर्तन की ओर बढ़ रहा है। जहां संघ का काम काफी समय से चल रहा है, वहां परिवार प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, स्वदेशी और स्थानीय वस्तुओं का प्रयोग, सामाजिक समरसता, एक मंदिर एक शमशान, एक जल स्रोत, एक नागरिक कानून के पालन आदि का आग्रह किया जा रहा है। संघ के प्रयास से संपूर्ण समाज में भी निःसंदेह सुधार होगा। इस दिशा में अनेकों संस्थाएं और अच्छे लोग काम कर रहे हैं और संघ उन्हें भी साथ लेकर सम्मान और श्रेय देता है। इस अविराम यात्रा में अभी बहुत काम शेष है। निःसंदेह अगले कुछ वर्षों में करोड़ों जन भारत माता की जय बोलेंगे तथा भारत के विश्व गुरु बनने का सपना साकार होगा। इसी क्रम में इस साल विजयदशमी से शुरू हो रहे शताब्दी वर्ष में संघ घर-घर संपर्क, हिंदू सम्मेलन, नागरिक गोष्ठियां और सामाजिक सद्भाव बैठकें जैसे चार बड़े अभियानों के जरिए पूरे देश में अलख जगायेगा।

इन कार्यक्रमों का उद्देश्य देश में राष्ट्रवाद की अलख जगाना, संघ के हिंदुत्व संबंधी विचार को घर-घर पहुंचाना और बहुसंख्यकों में सामाजिक सद्भाव कायम करना होगा। संघ इस दौरान हर मंडल और बस्ती में हिंदू सम्मेलन करेगा। गत दिनों दिल्ली स्थित केशव कुंज में संपन्न हुई तीन दिवसीय अखिल भारतीय प्रांत प्रचारक बैठक में शताब्दी वर्ष के आयोजनों का खाका तैयार किया गया। इस बैठक में शताब्दी वर्ष की कार्य योजना, संघ के कार्य विस्तार और विभिन्न प्रांतो की परिस्थितियों पर सिलसिलेबार विस्तृत चर्चा हुई। इस क्रम में शताब्दी वर्ष के दौरान किए जाने वाले कार्यों का ताना-बाना बुना गया। इसके जरिए संघ की कोशिश भौगोलिक और सामाजिक दृष्टि से सभी वर्गों, सभी क्षेत्रों तक संपर्क साधने की होगी। शताब्दी वर्ष में संघ 58,964 मंडलों व 44,055 बस्तियों में हिंदू सम्मेलन करेगा इसके अलावा हर तहसील व नगर में 11,960 सामाजिक सद्भाव बैठकें करके सभी 924 जिलों में नागरिक गोष्ठियों, घर-घर संपर्क के तहत देश के ज्यादा से ज्यादा लोगों से सीधा संपर्क करने वाला है। सद्भाव बैठकों में धर्म जागरण द्वारा सामाजिक बुराइयां दूर करने की बात होगी। बीते करीब एक दशक से संघ के कार्य का तेजी से विस्तार हो रहा है जो देश के भविष्य के लिए सुखद है। संघ समाज का संगठन कर इस भारत राष्ट्र को सशक्त, समर्थ और वैभव सम्पन्न बनाने को कृतसंकल्पित है और प्रत्येक स्वयंसेवक मन में यही दृढ निश्चय कर ध्येय पथ पर अग्रसर है। ■

हिन्दी के विरुद्ध बेसुरी आवाजें!

भारतीय भाषाओं का आपसी संघर्ष अंग्रेजी साम्राज्यवाद की जड़ें और मजबूत करेगा

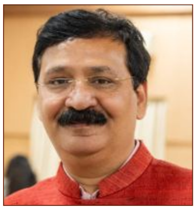

प्रो. संजय द्विवेदी
विभागाध्यक्ष, जनसंचार, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विवि., भोपाल

भरोसा नहीं होता कि महाराष्ट्र जैसी समावेशी और महान धरती से हिंदी के विरोध में भी कोई बेसुरी आवाज सामने आएगी। शिवसेना और महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना ने महाराष्ट्र में पहली से लेकर पाँचवीं कक्षा तक हिंदी पढ़ाए जाने का विरोध किया है। यह एक ऐसा विचार है, जिसकी जितनी निंदा की जाए कम है। मैं पत्रकारिता का विद्यार्थी हूं और जानता हूं कि आज की हिंदी को स्थापित करने के लिए बाबूराव विष्णुराव पराड़कर, पं. माधवराव सप्रे, रामकृष्ण खाडिलकर, लक्ष्मण नारायण गर्दे जैसे यशस्वी पत्रकारों का खास योगदान है। महाराष्ट्र समन्वय और सद्भाव की धरती है, जहां सभी विचारों, भाषाओं, सामाजिक आंदोलनों को फलने-फूलने का मौका मिला है। छत्रपति शिवाजी जहां सुशासन के राष्ट्रीय प्रतीक बने, तो संत परंपरा ने महाराष्ट्र को आध्यात्मिक ऊंचाई दी, मुंबई जहां कांग्रेस की स्थापना का गवाह बना तो दूसरी नागपुर से बाबा साहब आंबेडकर और डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार ने ऐतिहासिक आंदोलनों और संगठनों का सूत्रपात किया। मुंबई, नागपुर जैसे शहर अपनी बहुभाषिकता के कारण पूरे देश का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते रहे।

भाषा और मूल्यों को लेकर जिस तरह के विमर्श और चर्चाएं इन दिनों हवा में हैं, वह कई बार बहुत आतंकित करती हैं। अंग्रेजी के बढ़ते साम्राज्यवाद के बीच हमारी बोलियां और भाषाएं जिस तरह सहमी व सकुचाई हुई सी दिखती हैं, उसमें ऐसे विचार अंग्रेजी के प्रभुत्व को ही स्थापित करने का काम करेंगे। कुल मिलाकर संदेश यह है कि आइए हम भारतीय भाषा परिवार के लोग आपस में सिर फुटौव्वल करें, एक-दूसरे के कपड़े फाड़ें और अंग्रेजी को राजरानी की तरह प्रतिष्ठित कर दें। भारतीय भाषाओं का आपसी संघर्ष किसे ताकत दे रहा है कहने की जरूरत नहीं है। किंतु राजनीति भाषा, जाति, पंथ और क्षेत्र के नाम पर बांटने का व्यापार बन गयी है। कभी दक्षिण भारतीयों, कभी उत्तर भारतीयों के विरुद्ध अभियान चलाने वाली शिवसेना आज भाषा के नाम पर बंटवारे की राजनीति में लगी है।

विभाजनों का सुख लेती राजनीति - भारतीय भाषा परिवार की भाषाएं और बोलियां एक-दूसरे से टकरा रही हैं। राजनीतिक आधार पर विभाजन करके अपनी राजनीति चलाने वाली ताकतें भाषा का भी ऐसा ही इस्तेमाल कर रही हैं। देश का विचार और हमारी सामूहिक संस्कृति का विचार लुप्त होता जा रहा है। भाषा, क्षेत्र, जाति, पंथ ऐसे अखाड़े बन गए हैं, जिसने हमारी सामूहिकता को नष्ट कर दिया है। राजनीति इन्हीं विभाजनों का सुख ले रही है। कितना अच्छा होता कि शिवसैनिक अंग्रेजी को हटाने की बात करते, लेकिन उन्हें हिंदी से ही समस्या नजर आई। हिंदी भारतीय भाषा परिवार की बहुप्रसारित भाषा है। यह हमारे लोक जीवन में पैठी हुई है। हिंदी के खिलाफ किसी भी भाषा को खड़ा करना एक ऐसा अपराध है, जिसके लिए हमें पीढ़ियां माफ नहीं करेंगी। यह अपने पुरखों के यश को बिसरा देने जैसा है, अपने अतीत को अपमानित और लांछित करने जैसा है। स्वयं को राष्ट्रवादी और हिंदूवादी बताने वाले क्षेत्रीयता के आवेश में इस कदर आँखों पर पट्टियां बांध लेंगे, इसकी कल्पना भी डरावनी है। जिस तरह अंग्रेजी ने हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को पददलित किया है उसकी मिसाल नहीं मिलेगी। आज जबकि बाजारवाद की तेज हवा में हमारी तमाम बोलियां, तमाम शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियां, लोकगीत नष्ट होने के कगार पर हैं, क्या इन्हें बचाना और साथ लेकर चलना हमारी जिम्मेदारी नहीं है? हिंदी और मराठी सगी बहनों की तरह विकसित हुई हैं। मराठी का

साहित्य, रंगमंच, सिनेमा, अध्यात्म सब हिंदी भाषियों के प्रेरित करता रहा है। हिंदी इलाके में हो रहे 'जाणता राजा' के मंचन इस बात के गवाह हैं कि महाराष्ट्र की संस्कृति किस तरह हिंदी इलाकों में स्वीकृति पा रही है। हिंदी इलाकों से चुने गए सांसद, विधायक, जनप्रतिनिधि इसकी गवाही हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश के अनेक क्षेत्रों का मराठी भाषी शासकों ने नेतृत्व किया। राजनीति से लेकर साहित्य और समाज सेवा में अपना अग्रणी स्थान बनाया। आप देखें तो रानी अहिल्याबाई होलकर, जो एक हिंदी भाषी इलाके की शासिका थीं, उन्हें पूरे देश में किस तरह याद किया गया। भारत का विचार कृतित्व को सम्मान देने का रहा है। इसलिए अनेक मराठी भाषी राजनेता, लेखक, कलाकार हिंदी भाषी क्षेत्रों में सम्मान पाते रहे। ताजा उदाहरण में इंदौर से सुमित्राताई महाजन आठ बार लोकसभा का चुनाव जीतीं। कृष्ण मुरारी मोघे इंदौर के मेयर और खरगोन से सांसद रहे। ग्वालियर का सिंधिया परिवार भी मूलतः मराठीभाषी है जिसे हिंदी भाषी लोगों ने दिलों में जगह दी। कुशाभाऊ ठाकरे तो मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में भाजपा के पितृपुरुष रहे, बाद में राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। मप्र में तुकोजीराव पवार का परिवार, छत्तीसगढ़ में रजनीताई उपासने, पंडरीराव कृदत्त, यशवंत राव मेधावाले, दिनकर डांगे विधायक रहे, उप्र में मधुकर दीघे जैसे अनेक नेता विधानसभा पहुंचे। गंभीर अध्ययन से अनेक ऐसे उदाहरण हर क्षेत्र में पाए जा सकते हैं। इसी तरह महाराष्ट्र ने हिंदी वासियों को दिल में जगह दी। अनेक सांसद, विधायक और मंत्री महाराष्ट्र की सरकार में रहे। इस तरह कभी हिंदी और मराठी विवाद सामने नहीं आया। आजादी के 75 सालों के बाद इस तरह का विवाद चिंतनीय है और सोचनीय भी। हिंदी साहित्य, पत्रकारिता, थियेटर, फिल्म और कलाएं महाराष्ट्र में फली-फूलीं। यह सहज संवाद और आत्मीयता समाज के स्तर पर भी थी, भाषा के स्तर पर भी। हिंदी देश के बड़े क्षेत्र में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। इसका आदर करते हुए ही

हिंदी को देश की राजभाषा का दर्जा दिया गया है। किंतु राज्यों में राज्य की भाषाएं आदर पाएं और उच्वासन भी, इससे किसी को आपत्ति कहां है। क्या सरकारों और राजनेताओं की हिम्मत है कि वे अंग्रेजी को प्राथमिक शिक्षा से बाहर कर सकें? उन्हें पता है कि ऐसा करने से अभिभावकों का जो प्रतिरोध सामने आएगा, उसका वे सामना नहीं कर सकेंगें। इसलिए भाषा प्रेम की नौटंकी से बाज आकर ऐसे रास्ते निकालने चाहिए जिससे भारतीय भाषाओं का न्यूनतम सम्मान तो सुरक्षित रह सके। जाहिर है ऐसे विवाद अंग्रेजी की जड़ों को गहरा करने में सहायक बनेगें। इससे भारतीय भाषाएं उपेक्षा और अनादर की शिकार होती रहेंगी।

महाराष्ट्र समन्वय और सद्भाव की घरती है, जहां सभी विचारों, भाषाओं, सामाजिक आंदोलनों को फलने-फूलने का मौका मिला है। छत्रपति शिवाजी जहां सुशासन के राष्ट्रीय प्रतीक बने, तो संत परंपरा ने महाराष्ट्र को आध्यात्मिक ऊंचाई दी, मुंबई जहां कांग्रेस की स्थापना का गवाह बना तो दूसरी नागपुर से बाबा साहब आंबेडकर और डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार ने ऐतिहासिक आंदोलनों और संगठनों का सूत्रपात किया।

मातृभाषा में हो प्राथमिक शिक्षा: कई देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा ग्रहण करते हैं, किसी अन्य भाषा में नहीं। मराठी भाषा में प्राथमिक शिक्षा दिए जाने की माँग कतई नाजायज नहीं है और ऐसा होना ही चाहिए। किंतु 'हिंदी विरोध' को किसी नारे की तरह इस्तेमाल करते हुए उसके राजनीतिक इस्तेमाल से बचना सबसे बड़ी जरूरत है। मराठी को अध्ययन, अध्यापन की भाषा बनाने के लिए आंदोलन होना चाहिए पर वह हिंदी के तिरस्कार से नहीं होगा। मराठी को महाराष्ट्र में राजभाषा का दर्जा मिला हुआ है, तो राज्य सरकार का यह नैतिक दायित्व है कि उसे राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए सारे जतन करे। राजनीति का यह द्वंद समझा जा सकता है कि वह अपने सारे क्रिया व्यापार एक विदेशी भाषा (अंग्रेजी) में करती है और आम जनता के भावनात्मक शोषण के लिए स्थानीय भाषाओं के विकास की नारेबाजी करती है। महाराष्ट्र की फिजाओं में इस तरह की बातें फैलाना वास्तव में इस क्षेत्र की तासीर के खिलाफ है। भारतीय भाषाओं के बिना हम कितने बेचारे हो जाएंगे इसे बताने की आवश्यकता नहीं है। जब हजारों-हजार भाषाएं, हजारों-हजार बोलियाँ, हजारों शब्द लुप्त होने के कगार पर हैं और अंग्रेजी का साम्राज्यवाद उन्हें निगलने के लिए खड़ा है, तो ऐसे समय में क्या हम ऐसी फिजूल की बहसों के लिए अपना वक्त खराब करते रहेंगे। ■

भारत का संतुलनकारी दृष्टिकोण

एन. सी. बिपिन्द्र
रक्षा और रणनीतिक मामलों के विश्लेषक

वैश्विक मंच पर भारत का रणनीतिक उदय एक सूक्ष्म और बहुपक्षीय विदेश नीति से चिह्नित रहा है, जो अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा करते हुए एक बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था को बढ़ावा देने का प्रयास करती है। ऐसे दो मंच हैं जहां यह दृष्टिकोण सबसे स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। ब्रिक्स (ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका) और चतुष्कोणीय सुरक्षा संवाद, या क्वाड (भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया)।

ये दोनों समूह उद्देश्य, संरचना और विचारधारा में भिन्न भारत को अवसर और चुनौतियां दोनों प्रदान करते हैं। इन दोनों में भारत की सक्रिय भागीदारी इसके बढ़ते भू-राजनीतिक प्रभाव को रेखांकित करती है, साथ ही यह भी दिखाती है कि वह प्रतिस्पर्धी रणनीतिक लक्ष्यों को संतुलित करने की चुनौतीपूर्ण राह पर कैसे चल रहा है।

ब्रिक्स में भारत : वैश्विक दक्षिण का पक्षधर : ब्रिक्स को एक आधारभूत स्तंभ- भारत ब्रिक्स का एक संस्थापक सदस्य है, जिसकी परिकल्पना पश्चिमी-प्रधान वैश्विक संस्थाओं जैसे अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) और विश्व बैंक का विकल्प बनने के रूप में की गई थी। भारत के लिए ब्रिक्स एक ऐसा मंच है जहां वह वैश्विक दक्षिण की आवाज को बुलंद कर सकता है और अधिक न्यायसंगत वैश्विक वित्तीय एवं शासन संरचना की वकालत कर सकता है।

भारत ने न्यू डेवलपमेंट बैंक (NDB) में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जो उभरती अर्थव्यवस्थाओं में बुनियादी ढाँचे और सतत विकास परियोजनाओं को वित्तपोषित करता है। यह बैंक ब्रेटन वुड्स संस्थाओं का एक विकल्प है, और इसके रणनीतिक ढांचे में भारत की भूमिका इसे विकासशील देशों के बीच एक सौम्य शक्ति बनाती है।

चीन और रूस के साथ कूटनीतिक संवाद : ब्रिक्स भारत को चीन और रूस जैसे देशों के साथ संवाद बनाए रखने का एक दुर्लभ अवसर भी प्रदान करता है, विशेष रूप से तब जब चीन के साथ द्विपक्षीय संबंध तनावपूर्ण हों। ब्रिक्स मंच ने भारत को आतंकवाद, क्षेत्रीय सुरक्षा और सीमा-पार मुद्दों पर बहुपक्षीय तरीके से अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर दिया है। यद्यपि यह मंच द्विपक्षीय समस्याओं जैसे चीन के साथ सीमा तनाव को हल नहीं कर सकता, फिर भी यह संवाद बनाए रखने का माध्यम अवश्य है।

बहुपक्षीयता का समर्थन : भारत का ब्रिक्स के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) और विश्व व्यापार संगठन (WTO) जैसी वैश्विक शासन संस्थाओं में सुधार की मांग, नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। भारत का मानना है कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद बनी संस्थाएं अब वर्तमान वैश्विक शक्ति- संतुलन का प्रतिनिधित्व नहीं करतीं।

ब्रिक्स में भारत के समक्ष चुनौतियां : भू-राजनीतिक भिन्नताएँ, यद्यपि भारत का ब्रिक्स के अन्य देशों के साथ कुछ साझा लक्ष्य हैं, परंतु उसकी रणनीतिक सोच विशेष रूप से चीन और रूस के साथ भिन्न है। भारत-चीन संबंध प्रतिद्वंद्विता, सैन्य तनाव और व्यापार विवादों से भरे हैं। रूस-चीन की निकटता और यूक्रेन में रूस की सैन्य कार्रवाइयां ब्रिक्स के भीतर भारत की स्थिति को जटिल बना देती हैं।

चीन का वर्चस्व : चीन की आर्थिक शक्ति और राजनीतिक दबदबा ब्रिक्स के सामूहिक निर्णयों पर हावी हो जाती है। भारत कई बार खुद को उस स्थिति में पाता है जहां उसे चीन के प्रभुत्व का विरोध करना पड़ता है, साथ ही इस मंच को कार्यशील बनाए रखने की कोशिश भी करनी होती है।

संचालनात्मक अक्षमताएं : ब्रिक्स के अंतर्गत एनडीबी और रिजर्व व्यवस्था जैसी

कुछ उपलब्धियां हुई हैं, फिर भी यह मंच अक्सर दीर्घकालिक रणनीति की कमी और संस्थागत निष्क्रियता से जूझता रहता है। भारत के लिए ऐसे मंच में कूटनीतिक ऊर्जा लगाना चुनौतीपूर्ण होता है, जब क्वाड या जी20 जैसे तेज कार्यशील मंच अधिक त्वरित परिणाम दे रहे हों।

क्वाड में भारत : इंडो-पैसिफिक का सुरक्षा संरचनाकार : समान विचारधारा वाले लोकतंत्रों के साथ रणनीतिक सहयोग : क्वाड में भारत की भागीदारी 'मुक्त, खुला और समावेशी इंडो-पैसिफिक' की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह मंच सुरक्षा-केंद्रित है और चीन के आक्रामक रुख के प्रति सामूहिक प्रतिक्रिया के रूप में देखा जाता है। भारत की समुद्री शक्ति, रणनीतिक भौगोलिक स्थिति और अमेरिका, जापान व ऑस्ट्रेलिया के साथ संबंध, उसे इस मंच में एक प्रमुख भूमिका प्रदान करते हैं। मालाबार नौसेना अभ्यास जैसे कदम, क्षेत्रीय स्थिरता में भारत की सक्रिय भूमिका को दर्शाते हैं।

प्रौद्योगिकी और आर्थिक सहयोग : क्वाड ने अपनी भूमिका को सुरक्षा से आगे बढ़ाते हुए सप्लाई चेन, सेमीकंडक्टर, जलवायु परिवर्तन, वैक्सीन साझेदारी और महत्वपूर्ण तकनीकों तक विस्तारित कर दिया है। क्वाड वैक्सीन साझेदारी में भारत की भूमिका ने उसे एक ज़िम्मेदार क्षेत्रीय नेता के रूप में स्थापित किया है।

चीन के प्रभाव का संतुलन : भले ही क्वाड को सीधे 'एंटी-चाइना' समूह नहीं कहा गया है, परंतु यह बीजिंग के विस्तारवादी उद्देश्यों के विरुद्ध एक सामरिक संतुलन की भूमिका निभाता है। भारत के लिए यह एक रणनीतिक अवसर है, विशेषकर 2020 के गलवान संघर्ष के बाद, जिससे वह सैन्य गठबंधन में शामिल हुए बिना अपनी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ा सकता है।

क्वाड में भारत के समक्ष चुनौतियां : रणनीतिक स्वायत्तता का संतुलन : भारत की ऐतिहासिक नीति गुटनिरपेक्षता और रणनीतिक स्वायत्तता पर आधारित रही है। इसलिए भारत क्वाड को एक सैन्य गठबंधन की तरह दिखने से बचाना चाहता है। चीन के साथ व्यापार और कूटनीतिक रिश्ते बनाए रखने की आवश्यकता के चलते भारत को क्वाड के 'चीन-विरोधी' रुख से सावधानी बरतनी होती है।

असमान क्षमताएँ और अपेक्षाएँ : क्वाड सदस्य देशों में भारत के सामने सबसे अधिक विकासात्मक चुनौतियाँ हैं और उसके पास सैन्य संसाधनों की सबसे कम उपलब्धता है, विशेषकर उन्नत तकनीक और 'ब्लू वॉटर' नौसेना क्षमताओं के संदर्भ में। यद्यपि भारत भौगोलिक और जनसांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करता है, फिर भी क्षमताओं में असमानता के कारण समान दायित्व साझा करने में कभी-कभी बाधा आती है। इन अंतरालों को पाटने के लिए निरंतर निवेश और गहन रक्षा-औद्योगिक सहयोग की आवश्यकता होगी।

राष्ट्रहितों में विविधता : सभी क्वाड सदस्यों के अपने-अपने राष्ट्रीय हित और प्राथमिकताएं हैं। अमेरिका की वैश्विक प्राथमिकताएँ हैं, जबकि भारत की रुचि क्षेत्रीय सुरक्षा तक सीमित रहती है। ऐसे अंतर कभी-कभी दीर्घकालिक रणनीति के समन्वय में बाधा बन सकते हैं।

ऐसे दो मंच हैं जहां यह दृष्टिकोण सबसे स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। ब्रिक्स (ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका) और चतुष्कोणीय सुरक्षा संवाद, या क्वाड (भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया)। ये दोनों समूह उद्देश्य, संरचना और विचारधारा में भिन्न भारत को अवसर और चुनौतियां दोनों प्रदान करते हैं। इन दोनों में भारत की सक्रिय भागीदारी इसके बढ़ते भू-राजनीतिक प्रभाव को रेखांकित करती है, साथ ही यह भी दिखाती है कि वह प्रतिस्पर्धी रणनीतिक लक्ष्यों को संतुलित करने की चुनौतीपूर्ण राह पर कैसे चल रहा है।

भारत की रणनीतिक गमणा, सतुंलन का सफर : भारत की ब्रिक्स और क्वाड दोनों में समानांतर भागीदारी उसके बहुपक्षीय जुड़ाव की रणनीति को दर्शाती है, विभिन्न मंचों पर विविध साझेदारों के साथ मिलकर अपने राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ाने की क्षमता, यह एक परिपक्व कूटनीति को प्रदर्शित करता है, जहां भारत शीत युद्ध की द्विध्रुवीय सोच या गठबंधन प्रणालियों में स्वयं को सीमित नहीं करता, बल्कि लचीली साझेदारियों को प्राथमिकता देता है।

ब्रिक्स के माध्यम से, भारत वैश्विक दक्षिण (Global South) में एक अग्रणी भूमिका को सुदृढ़ करता है, वित्तीय सुधार, न्यायसंगत विकास और बहुध्रुवीयता को बढ़ावा देता है।

क्वाड के माध्यम से, यह अपनी प्रतिरोध क्षमता को सशक्त करता है, समुद्री सुरक्षा को मजबूत करता है, और पश्चिमी देशों के साथ तकनीकी सहयोग को गहरा करता है।

भारत एक सेतु शक्ति के रूप में : ब्रिक्स और क्वाड में भारत की सक्रिय भूमिका यह दर्शाती है कि वह एक 'सेतु शक्ति' (Bridge Power) बनना चाहता है। ऐसा देश जो वैश्विक उत्तर और दक्षिण, महाद्वीपीय और समुद्री रणनीतियों, विकास और सुरक्षा सबको जोड़ सके।

इन मंचों में भारत की भूमिका सिर्फ भागीदारी नहीं, बल्कि वैश्विक शासन की दिशा को आकार देने की है। असली परीक्षा तब होगी जब यह कूटनीतिक संतुलन भारत की आर्थिक, सुरक्षा और वैश्विक स्थिति को ठोस रूप में लाभ पहुंचाए।

आने वाले वर्षों में भारत के निर्णय ब्रिक्स और क्वाड में एक नए विश्व व्यवस्था को परिभाषित करने में निर्णायक होंगे कृ एक ऐसी व्यवस्था जो अधिक बहुध्रुवीय, न्यायसंगत और समावेशी हो। ■

स्वच्छता एवं नशामुक्ति के क्षेत्र में अतुलनीय कार्य करते सामाजिक संगठन

प्रहलाद सबनानी

सेवानिवृत्त पूर्व उप प्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक

इस धरा पर जन्म लेने वाले प्रत्येक जीव के लिए प्रकृति ने पर्याप्त खाद्य पदार्थ दिए हैं परंतु अति लालच के चलते मानव ने प्रकृति का शोषण करना शुरू कर दिया है। इसमें कोई अब कोई संदेह नहीं रह गया है कि मानव ने अपनी जिंदगी को आसान बनाने के लिए पर्यावरण का अत्यधिक नुकसान किया है और इसका परिणाम आज उसे ही भुगतना भी पड़ रहा है। कई देशों में तो भयंकर गर्मी में वहां के जंगलों में आग लगने की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं जिनसे जान और माल की भारी हानि हो रही है। हम पर्यावरण के सम्बंध में बढ़ चढ़ कर चर्चाएं तो करते हैं परंतु आज हमारे गावों में खेत, प्लाटों में परिवर्तित हो गए हैं। हमारे खेतों पर शोपिंग काम्प्लेक्स एवं मॉल खड़े हो गए हैं, जिससे हरियाली लगातार कम होती जा रही है।

बीते कुछ वर्षों में कंकरीट की इमारतों में बेतहाशा वृद्धि एवं भूमि प्रयोग में बदलाव के चलते भारत में भी तापमान लगातार बढ़ रहा है। देश के महानगर अर्बन हीट आइलैंड बन रहे हैं। अर्बन हीट आइलैंड वह क्षेत्र होता है जहां अगल-बगल के इलाकों से अधिक तापमान रहता है। कई स्थानों पर अत्यधिक गर्मी के पीछे अपर्याप्त हरियाली, अधिक आबादी, घने बसे घर और इंसानी गतिविधियां जैसे गाडियों और गैजेट से निकलने वाली हीट आदि कारण जिम्मेदार हो सकते हैं। कार्बन डाईआक्साइड और मेथेन जैसी ग्रीन हाउस गैसों एवं कूड़ा जलाने से भी गर्मी बढ़ती है। राजधानी दिल्ली का उदाहरण हमारे सामने है। जहां चारों दिशाओं में बने डंपिंग यार्डों में आग लगी ही रहती है और लोगों का सांस लेना भी अब दूभर हो रहा है।

भारत ने वर्ष 2070 तक नेट जीरो यानी कार्बन उत्सर्जन रहित अर्थव्यवस्था का लक्ष्य तय किया हुआ है। यद्यपि पर्यावरण रक्षा में भारत के प्रयास बहुआयामी रहे हैं लेकिन यह प्रयास तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक देशवासी प्राकृतिक संसाधनों का अनावश्यक अत्यधिक दोहन करना बंद नहीं करते। शहरों के बढ़ते तापमान की रोकथाम हेतु जरूरी है कि मौसम और वायु प्रवाह का ठीक तरह से नियोजन किया जाए। हरियाली का विस्तार, जल स्रोतों की सुरक्षा, वर्षा जल संचय, वाहनों एवं एयर कंडीशंस की संख्या की कमी से ही हम प्रचंड गर्मी को कम कर सकते हैं। पृथ्वी का तापमान घटेगा तभी मानव सुरक्षित रह पाएगा।

उक्त संदर्भ में यह हम सभी भारतीयों के लिए हर्ष का विषय होना चाहिए कि हमारे देश में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे संगठन मौजूद हैं जो सदैव ही सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सेवा कार्य करने वाले संगठनों को साथ लेकर, देश पर आने वाली किसी भी विपत्ति में आगे आकर, सेवा कार्य करना प्रारम्भ कर देते हैं। भारत के पर्यावरण में सुधार लाने की दृष्टि से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने तो बाकायदा एक नई पर्यावरण गतिविधि को ही प्रारम्भ कर दिया है। जिसके अंतर्गत समाज में विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाले संगठनों को साथ लेकर संघ द्वारा देश में प्लास्टिक का उपयोग बिल्कुल नहीं करने का अभियान प्रारम्भ किया गया है और देश में अधिक से अधिक पेड़ लगाने की मुहिम प्रारम्भ की गई है। साथ ही, विभिन्न शहरों को स्वच्छ एवं नशामुक्त बनाने हेतु भी विशेष अभियान प्रारम्भ किए हैं। उदाहरण के तौर पर ग्वालियर को स्वच्छ, नशामुक्त एवं प्लास्टिक मुक्त शहर बनाने का बीड़ा उठाया गया है।

इसी संदर्भ में ग्वालियर महानगर में विविध संगठनों के दायित्ववान कार्यकर्ताओं का दो दिवसीय शिविर आयोजित किया गया था। इस शिविर के एक विशेष सत्र में इस बात पर विचार किया गया कि ग्वालियर महानगर को स्वच्छ एवं नशामुक्त बनाया जाना चाहिए। उक्त शिविर के समापन के पश्चात उक्त समस्याओं के हल हेतु विविध संगठनों के दायित्ववान कार्यकर्ताओं की तीन बैठकें आयोजित की गईं। इन बैठकों में विस्तार से विचार करने के उपरांत यह निर्णय लिया गया कि कुछ चिन्हित कार्यकर्ताओं को विभिन्न मठ, मंदिरों, स्कूलों, संस्थानों आदि में विषय प्रस्तुत करने हेतु भेजा

जाए ताकि उक्त समस्याओं के हल में समाज की भागीदारी सुनिश्चित की जा सके। इस संदर्भ में चुने गए 60 कार्यकर्ताओं के लिए एक वक्ता कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। इन चिन्हित कार्यकर्ताओं को विभिन संस्थानों में विषय प्रस्तुत करने हेतु भेजा गया था ताकि उक्त समस्याओं के हल करने हेतु समाज को भी साथ में लेकर कार्य को सम्पन्न किया जा सके।

साथ ही, ग्वालियर को प्रदूषण मुक्त सुंदर नगर बनाए जाने के अभियान को स्थानीय जनता के बीच ले जाने हेतु, माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर दिनांक 25 दिसम्बर 2024 को, ग्वालियर के चुने हुए 29 चौराहों पर मानव श्रृंखलाएं बनाई गई थी, लगभग 8,000 नागरिकों ने इस मानव श्रृंखला में भागीदारी की थी। इसी प्रकार, ग्वालियर को व्यसन मुक्त नगर बनाए जाने के अभियान को स्थानीय जनता के बीच ले जाने हेतु, स्वामी विवेकानंद जी के जन्म दिवस एवं अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस के शुभ अवसर पर, दिनांक 12 जनवरी 2025 को एक विशाल मेराथन दौड़ का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम के आयोजन में स्थानीय प्रशासन का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ एवं लगभग 6,000 नागरिकों ने इस मेराथन दौड़ में भाग लिया था।

संघ के ग्वालियर विभाग द्वारा ग्वालियर महानगर में अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाने की मुहिम प्रारम्भ की गई। जिसके अंतर्गत ग्वालियर के कई विद्यालयों में वहां के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को साथ लेकर स्वयंसेवकों द्वारा नगर में भारी मात्रा में पौधारोपण किया गया। ग्वालियर की पहाड़ियों पर भी इस मानसून के मौसम के दौरान हजारों की संख्या में नए पौधे रोपे गए हैं। गजराराजा स्कूल, केआरजी महाविद्यालय एवं गुप्तेश्वर मंदिर की पहाड़ियों को तो पूर्णतः हरा भरा बना दिया गया है।

नगर के प्रबुद्ध नागरिकों द्वारा नगर के विद्यालयों, महाविद्यालयों, सामाजिक संगठनों, व्यावसायिक संगठनों, धार्मिक संगठनों, एवं नगर के विभिन्न चौराहों पर नागरिकों को शपथ दिलाई जा रही है कि "मैं ग्वालियर नगर को प्लास्टिक मुक्त बनाने हेतु, आज से प्लास्टिक का उपयोग बिल्कुल नहीं करूंगा"। अभी तक एक लाख से अधिक नागरिकों को यह शपथ दिलाई जा चुकी है। कई स्कूल, कई मंदिर एवं कई महाविद्यालय (लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शिक्षण संस्थान - एलएनआईपीई सहित) पॉलिथीन मुक्त हो चुके हैं। इसी प्रकार, ट्रिपल आईटीएम प्रबंधन के प्रयास से संस्थान के आसपास दुकानदारों द्वारा मादक पदार्थों की बिक्री करना बंद कर दिया गया है। साथ ही, ग्वालियर महानगर में एक लाख से अधिक नागरिक, नशा नहीं करने का संकल्प ले चुके हैं।

भारत ने वर्ष 2070 तक नेट जीरो यानी कार्बन उत्सर्जन रहित अर्थव्यवस्था का लक्ष्य तय किया हुआ है। यद्यपि पर्यावरण रक्षा में भारत के प्रयास बहुआयामी रहे हैं लेकिन यह प्रयास तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक देशवासी प्राकृतिक संसाधनों का अनावश्यक अत्यधिक शोषण करना बंद नहीं करते। शहरों के बढ़ते तापमान की रोकथाम हेतु जरूरी है कि मौसम और वायु प्रवाह का ठीक तरह से नियोजन किया जाए।

विभिन्न मठ, मंदिरों एवं गुरुद्वारों में भंडारों का आयोजन किया जाता है। इन भंडारों में अब प्रसादी को दोनों, पत्तलों में परोसा जाने लगा है एवं प्लास्टिक का उपयोग लगभग बंद कर दिया गया है। साथ ही, इन मंदिरों के आसपास प्रशासन एवं जनप्रतिनिधियों द्वारा डस्टबिन रखवाये गए हैं, ताकि कचरे को यहां वहां न फैला कर इन डस्टबीन में डाला जा सके। इससे, मठ, मंदिरों एवं गुरुद्वारों के आसपास के इलाके स्वच्छ रहने लगे हैं। ग्वालियर महानगर के जनप्रतिनिधि विभिन्न मैरिज गार्डन में जाकर इनके मालिकों से लगातार चर्चा कर रहे हैं कि इन मैरिज गार्डन में अमानक पॉलिथीन का उपयोग बिलकुल नहीं होना चाहिए। इसका असर यह हुआ है कि अब मैरिज गार्डन में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में प्लास्टिक का उपयोग धीरे धीरे कम होता हुआ दिखाई दे रहा है।

नागरिकों को कपड़े से बने थैले भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं, ताकि बाजारों से सामान खरीदते समय इन कपड़े के थैलों का इस्तेमाल किया जा सके और प्लास्टिक के उपयोग को तिलांजलि दी जा सके। प्लास्टिक के उपयोग को खत्म करने के उद्देश्य से गणेशोत्सव के पावन पर्व पर नगर में विभिन्न गणेश पांडालों में बच्चों द्वारा नाटक भी खेले गए। साथ ही, संघ ने अपने स्वयंसेवकों को आग्रह किया है कि संघ द्वारा आयोजित किए जाने वाले किसी भी कार्यक्रम में प्लास्टिक का इस्तेमाल बिल्कुल नहीं किया जाना चाहिए। और, अब संघ के कार्यक्रमों में इस बात का ध्यान रखा जाने लगा है कि प्लास्टिक का उपयोग बिल्कुल नहीं किया जाय।

ग्वालियर के नागरिकों, विविध संगठनों, सामाजिक संस्थानों एवं प्रशासन द्वारा लगातार किए गए प्रयासों के चलते ग्वालियर महानगर को स्वच्छ सर्वेक्षण 2024 के अंतर्गत राज्य स्तरीय मिनिस्ट्रीयल अवार्ड के लिए चुना गया है। यह पुरस्कार 17 जुलाई 2025 को दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू द्वारा प्रदान किया जाएगा। इसी प्रकार, सिविल अस्पताल, हजीरा, जिला ग्वालियर को स्थानीय नागरिकों को उच्च स्तर की गुणवत्ता पूर्ण संक्रमण रहित स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने हेतु राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, मध्य प्रदेश से प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

जब पूरे देश में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे संगठन आगे आकर समाज के अन्य संगठनों को साथ लेकर देश के पर्यावरण में सुधार लाने हेतु कार्य प्रारम्भ करेंगे तो भारत के पर्यावरण में निश्चित ही सुधार दृष्टिगोचर होने लगेगा। ■

टीआरएफ को आतंकी संगठन घोषित करने के अमेरिकी निहितार्थ

डॉ. अनिल निगम
वरिष्ठ पत्रकार

अमेरिका ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में अप्रैल 2025 में हुए आतंकी हमले के संबंध में 'द रेजिस्टेंट फ्रंट' (टीआरएफ) को हाल ही में आधिकारिक रूप से आतंकी संगठन घोषित किया है। टीआरएफ लश्कर-ए-तैयबा का ही एक अनुसंगी संगठन है जो लंबे समय से जम्मू-कश्मीर में हिंसा एवं दहशत फैलाता रहा है। अमेरिका का यह कदम आतंकवाद के विरुद्ध अंतरराष्ट्रीय सहयोग की दिशा में सराहनीय एवं स्वागत योग्य है, लेकिन इसके पीछे उसकी नीति में छिपा दोगलापन और दोहरा मापदंड भी उजागर होता है। ध्यातव्य है कि यह कोई पहला अवसर नहीं है जब अमेरिका ने किसी आतंकी संगठन को तब आतंकी घोषित किया जब वह सीधे अमेरिकी अथवा पश्चिमी हितों से टकराया हो, जबकि भारत लंबे समय से इस संगठन की गतिविधियों के बारे में अंतरराष्ट्रीय समुदाय को लगातार जागरूक करता रहा।

अप्रैल 2025 में जम्मू-कश्मीर के पर्यटक स्थल पहलगाम में एक घातक आतंकी हमला हुआ जिसमें 26 निर्दोष नागरिकों की हत्या कर दी गई थी। इस हमले की जिम्मेदारी रेजिस्टेंट फ्रंट' ने ली थी। टीआरएफ की स्थापना वर्ष 2019 में हुई थी, जब भारत की केंद्र सरकार ने अनुच्छेद 370 को समाप्त किया और जम्मू-कश्मीर को दो केंद्र शासित प्रदेशों-जम्मू कश्मीर और लेह-लद्दाख में विभाजित किया। इसके बाद पाकिस्तान समर्थित आतंकी संगठनों ने नए नामों और ढांचे के अंतर्गत आतंकी गतिविधियों को अंजाम देना शुरू किया। टीआरएफ को भी उसी की उत्पत्ति माना जाता है।

भारत ने प्रारंभ से ही टीआरएफ को आतंकी संगठन माना और उसके खिलाफ सर्जिकल ऑपरेशन और कड़ी कार्यवाही की। भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ और अमेरिका दोनों से इस संगठन को प्रतिबंधित करने की मांग कई बार उठाई, लेकिन अमेरिका ने लंबे समय तक इस पर कोई ठोस निर्णय नहीं लिया। टीआरएफ के खिलाफ पुख्ता सबूत होने के बावजूद अमेरिका की कार्रवाई अप्रैल 2025 के हमले के तीन महीने बाद आई, जब अंतरराष्ट्रीय मीडिया और मानवाधिकार संगठनों का ध्यान इस पर गया।

निस्संदेह, टीआरएफ को आतंकी संगठन घोषित करने का भारत-अमेरिका संबंधों पर सकारात्मक असर पड़ेगा। यह निर्णय कई दृष्टिकोणों से भारत के लिए रणनीतिक, कूटनीतिक और सुरक्षा संबंधी सहयोग को सशक्त बनाता है। यह भारत की उस मांग को मान्यता देता है जिसमें वह पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक मंच पर कार्रवाई की मांग करता रहा है। इससे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की विश्वसनीयता और सुरक्षा चिंताओं को और अधिक समर्थन मिलेगा। यह भारत-अमेरिका रणनीतिक संबंधों को और गहरा करेगा। दरअसल, अमेरिका का यह कदम पाकिस्तान के लिए एक स्पष्ट संदेश भी है कि अब अमेरिका उसकी धरती से संचालित

आतंकवादी नेटवर्क को बर्दाश्त नहीं करेगा।

लेकिन अमेरिका का टीआरएफ को आतंकी संगठन घोषित करने में विलंब इस बात की पुष्टि करता है कि अमेरिका की आतंकवाद विरोधी नीति सार्वभौमिक नहीं, बल्कि स्वार्थ-आधारित है। जब तक कोई संगठन सीधे अमेरिकी हितों को प्रभावित नहीं करता या पश्चिमी मीडिया में चर्चा में नहीं आता, तब तक उसे गंभीरता से नहीं लिया जाता।

अंतरराष्ट्रीय मामलों में अमेरिका के दोहरे मापदंड वाले कई उदाहरण पहले से मौजूद हैं। अमेरिका ने वर्ष 2020 में अफगानिस्तान से सेना हटाने के बदले तालिबान से समझौता किया, जबकि यह वही तालिबान था जिसने 9/11 हमले के गुनाहगारों को शरण दी थी। भारत सहित विश्व के अनेक देशों ने इस समझौते पर आपत्ति जताई, लेकिन अमेरिका ने अपने सैनिकों की वापसी के नाम पर तालिबान को वैधता दे दी।

सर्वविदित है कि पाकिस्तान विश्व भर में आतंकवाद को बढ़ावा देता रहा है, फिर भी अमेरिका ने उसे दशकों तक आर्थिक और सैन्य सहायता दी। भारत ने बार-बार आतंकी गतिविधियों में पाकिस्तानी भूमिका के सबूत दिए, पर अमेरिका ने अकसर स्ट्रैटजिक पार्टनर कहकर पाकिस्तान की मदद करता रहा।

अमेरिका ने कई बार ऐसे देशों के खिलाफ प्रस्तावों को वीटो किया जिनके खिलाफ मानवाधिकार उल्लंघन या आतंकवाद के ठोस प्रमाण थे, केवल इसलिए क्योंकि वे उसके रणनीतिक साझेदार थे। यही नहीं, भारत ने वर्ष 2017 में हिजबुल के प्रमुख सैयद सलाहुद्दीन को अंतरराष्ट्रीय आतंकी घोषित करने की मांग की थी। अमेरिका ने उसे आतंकवादी घोषित तो किया, लेकिन हिजबुल को प्रतिबंधित नहीं किया गया।

दरअसल, अमेरिका की विदेश नीति हमेशा उसके रणनीतिक हितों के इर्द-गिर्द घूमती है। भारत-पाकिस्तान के संदर्भ में अमेरिका का दृष्टिकोण कभी स्पष्ट नहीं रहा। वह भारत को एक आर्थिक और तकनीकी साझेदार मानता है, जबकि पाकिस्तान को अफगानिस्तान और मध्य एशिया में एक भू-राजनीतिक उपयोगी मोहरा। यही वजह है कि पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के प्रति उसकी नीति अस्पष्ट और अवसरवादी रही है।

भारत ने प्रारंभ से ही टीआरएफ को आतंकी संगठन माना और उसके खिलाफ सर्जिकल ऑपरेशन और कड़ी कार्यवाही की। भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ और अमेरिका दोनों से इस संगठन को प्रतिबंधित करने की मांग कई बार उठाई, लेकिन अमेरिका ने लंबे समय तक इस पर कोई ठोस निर्णय नहीं लिया।

वास्तव में टीआरएफ को आतंकी संगठन घोषित करने के पीछे अमेरिका के हितार्थ ही प्रमुख हैं। चूंकि अप्रैल 2025 के पहलगाम हमले के बाद अंतरराष्ट्रीय समुदाय विशेष रूप से यूरोपीय संघ और संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद पर दबाव बढ़ा कि आतंकवाद को लेकर अमेरिकी अपना स्टैंड स्पष्ट करे। दूसरा एक प्रमुख दबाव अमेरिका पर इस बात का भी है कि अमेरिका को यह समझ में आ गया है कि चीन-पाकिस्तान के बीच नजदीकी उसके हितों के लिए दीर्घकालिक खतरा है।

अमेरिका का टीआरएफ को आतंकी संगठन घोषित करना एक सामयिक निर्णय है जो अंतरराष्ट्रीय दबाव और भूराजनीतिक समीकरणों के कारण लिया गया है। यह एक सकारात्मक कदम जरूर है, लेकिन इसे अमेरिका की नीति में मूलभूत बदलाव कहना गलत होगा। जब तक अमेरिका आतंकवाद के खिलाफ सार्वभौमिक दृष्टिकोण नहीं अपनाता और अपने दोगले चरित्र को नहीं छोड़ता, तब तक ऐसे निर्णयों को संदेह की दृष्टि से ही देखा जाना चाहिए। ■

समुद्रयान मिशन
भारत की तकनीकी आत्मनिर्भरता का प्रतीक

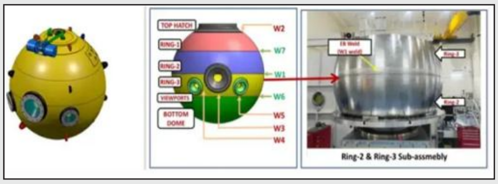

भारत अब न सिर्फ अंतरिक्ष में, बल्कि समुद्र की गहराइयों में भी अपने वैज्ञानिक और तकनीकी सामर्थ्य का प्रदर्शन कर रहा है। ISRO और NIOT की साझेदारी में विकसित की जा रही 'मत्स्य-6000' पनडुब्बी, 6 किमी गहराई तक मानव को समुद्र में ले जाने में सक्षम होगी। इस मिशन में प्रयुक्त हो रही देश में विकसित अत्याधुनिक तकनीकें, जैसे टाइटेनियम स्फेरिकल वेसल, इलेक्ट्रॉन बीम वेल्डिंग और 700 से अधिक वेल्ड परीक्षण, भारत की वैज्ञानिक आत्मनिर्भरता और वैश्विक तकनीकी नेतृत्व का प्रमाण हैं। लगभग ₹1.25 करोड़ की लागत वाला यह मिशन ब्लू इकोनॉमी, खनिज संसाधनों, और सामरिक हितों को मजबूती देने के साथ-साथ भारत को गहरे समुद्र में मानव मिशन की क्षमता रखने वाले गिने-चुने देशों में शामिल करेगा। इस परियोजना के तहत, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओशन टेक्नोलॉजी (NIOT) और इसरो (ISRO) के विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र (VSSC) के बीच एक समझौता (MoU) हस्ताक्षरित किया गया है, जिसके अंतर्गत VSSC इस पनडुब्बी के लिए अत्याधुनिक स्फेरिकल वेसल (गोलाकार पात्र) का डिजाइन और निर्माण करेगा।

धम्मचक्कपवत्तन (धर्मचक्रप्रवर्तन)
आषाढ़-पूर्णिमा की एक महत्त्वपूर्ण घटना

डॉ. उज्ज्वल कुमार
प्रोफेसर, बौद्ध अध्ययन विभाग
कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

वैशाख पूर्णिमा (पालि : वेसाख-पुण्णिमा), जिसे बुद्ध पूर्णिमा भी कहा जाता है, के पश्चात् बौद्ध कालगणना में दूसरी सबसे महत्वपूर्ण तिथि आषाढ़ पूर्णिमा (पालिः आसाळ्ह पुण्णिमा) मानी जाती है, जिसे गुरु पूर्णिमा के रूप में भी मनाया जाता है। यही वह पावन दिवस है, जब गौतम बुद्ध ने वाराणसी के सारनाथ में अपना प्रथम उपदेश दिया था। यह उपदेश धम्मचक्कपवत्तन सुत्त के नाम से प्रसिद्ध है और इस ऐतिहासिक घटना को धम्मचक्कपवत्तन कहा जाता है। इस उपदेश में बुद्ध ने दुःख (दुक्ख), दुःख का कारण (दुक्खसमुदय), दुःख निरोध (दुक्खनिरोध) और दुःख निरोध के मार्ग (दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा) कृआर्य अष्टांगिक मार्ग (अरिय अट्ठङ्गिक मग्ग) - का निरूपण किया। यह उपदेश न केवल कालक्रम की दृष्टि से प्रथम है, बल्कि महत्व की दृष्टि से भी सर्वोपरि है, क्योंकि इसमें बुद्ध-धर्म के मूल सत्यों का उद्घाटन हुआ। यह उपदेश बौद्ध उद्दीपन के प्रारम्भ में एक घोषणापत्र के रूप में प्रस्तुत है, जिसमें बुद्ध के समय प्रचलित धर्म-दर्शन पद्धतियों -**अत्तकिलमथानुयोगो** (आत्म-पीड़न का मार्ग) और **कामेसु कामसुखल्लिकानुयोगो** (इन्द्रिय-सुख का मार्ग) - से भिन्न 'मज्झिमा पटिपदा' मध्यम मार्ग को स्पष्ट किया गया।

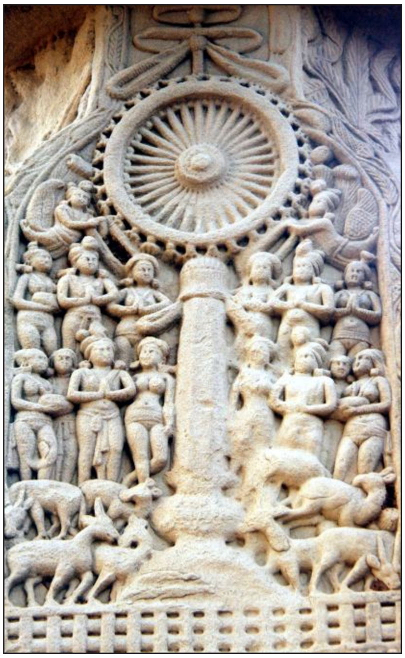

जैसा कि पालि साहित्य में वर्णित है, बोधि-प्राप्ति के बाद बुद्ध के अंतर्मन में एक गहन द्वंद्व उत्पन्न हुआ, **''अधिगतो खो म्यायं धम्मो गम्भीरो दुद्दसो दुरनुबोधो सन्तो पणीतो अतक्कावचरो निपुणो पण्डितवेदनीयो।... अहञ्चेव खो पन धम्मं देसेय्यं, परे च मे न आजानेय्युं, सो ममस्स किलमथो, सा ममस्स विहेसा"ति।"**, यह धर्म मैंने प्राप्त किया है - गम्भीर है, देख पाना कठिन है, समझ पाना कठिन है, शान्त है, उत्कृष्ट है, तर्क के क्षेत्र में नहीं आता, अत्यन्त सूक्ष्म है और केवल बुद्धिमान ही उसे जान सकते हैं।... यदि मैं ही केवल धर्म का उपदेश करूँ और दूसरे लोग उसे न समझें, तो वह मेरे लिए पीड़ादायक होगा, वह मेरे लिए कष्टदायक होगा। इस आंतरिक द्वंद्व के बीच, परंपरानुसार ब्रह्मा सहम्पति ने बुद्ध से आग्रह किया- **'देसेतु, भन्ते, भगवा धम्मं, देसेतु सुगतो धम्मं।'** 'भन्ते, भगवान धम्म का उपदेश करें, सुगत धम्म का उपदेश करें।' तब बुद्ध ने धम्म-देशना का निश्चय किया।

इसके पश्चात् बुद्ध ने अपने द्वारा खोजे गए नये मार्ग का उपदेश देने के लिए उन पाँच सहयोगियों को स्मरण किया, जिनके साथ उन्होंने कठोर तपस्या **(अत्तकिलमथानुयोग)** का जीवन व्यतीत किया था। धर्म और दर्शन के इतिहास में यह घटना अत्यंत विलक्षण और महत्वपूर्ण मानी जाती है। उल्लेखनीय है कि इतने गहन और मौलिक सत्य के उपदेश के लिए बुद्ध न तो किसी सगे-संबंधी को स्मरण करते हैं और न ही अपने जातिगत परिजनों को, बल्कि वे उन मित्रों को याद करते हैं, जो उनके विचारों की गहराई को समझने और आत्मसात करने की सामर्थ्य रखते थे। यह चयन इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि बुद्ध का उद्देश्य केवल उपदेश देना नहीं था, बल्कि अपने अनुभव और ज्ञान को ऐसे पात्रों तक पहुँचाना था, जो न केवल उसे स्वयं ग्रहण कर सकें, बल्कि आगे बढ़ाकर जन-जन तक प्रसारित भी कर सकें। यह गुरु द्वारा योग्य शिष्य की खोज का एक अद्भुत और प्रेरक उदाहरण है।

यह निश्चित कर लेने के बाद कि वे अपना पहला उपदेश अपने उन्हीं पाँच मित्रों को देंगे, बुद्ध सम्बोधि (= बोध-गया) से वाराणसी की ओर प्रस्थान करते हैं। मार्ग में बोध-गया और गया के बीच उपक आजीवक के पूछने पर बुद्ध उत्तर देते हैं कि वे "धर्म का चक्र घुमाने" के लिए काशी जा रहे हैं, **''धम्मचक्कं पवत्तेतुं, गच्छामि कासिनं पुरं"**। यह वह ऐतिहासिक क्षण था, जब पहली बार धम्मचक्क शब्द का प्रयोग हुआ। इसी प्रसंग में, बुद्ध ने अपने उपदेश के प्रसार के लिए दुन्दुभि की उपमा का भी प्रयोग किया- **"अन्धीभूतस्मिं लोकस्मिं, आहञ्छं अमतदुन्दुभि'न्ति"**, "अंधकार में डूबे लोक में अमरता की दुन्दुभि को बजाने जा रहा हूँ"।

दुन्दुभि और चक्र के प्रतीक के बीच, बौद्ध परंपरा में चक्र का प्रतीक सर्वाधिक मानक और प्रतिष्ठित रूप से स्थापित हो गया। विशेष रूप से "धम्मचक्क," न केवल उपदेश का प्रतीक बन गया, बल्कि यह धर्म के विस्तार, उसके अनवरत प्रवर्तन और अपरिवर्तनीयता का भी द्योतक बन गया। बौद्ध ग्रंथों में उल्लेख है कि जब बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया, तो देवताओं ने उल्लासपूर्वक उद्घोष किया - "**धम्मचक्कं पवत्तितं**", "धम्मचक्क घुमाया गया है।" इसे "अप्पटिवत्तियं", "अपरिवर्तनीय" भी कहा गया। इसका अर्थ है कि यह उपदेश समय और स्थान की सीमाओं से परे, सर्वत्र और सर्वकाल में स्थिर और अडिग रहेगा। पालि के ग्रंथों में इसे इन शब्दों में व्यक्त किया गया है - "**अप्पटिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिं**", अर्थात् न तो कोई श्रमण (सन्यासी), न ब्राह्मण, न देवता, न मार, न ब्रह्मा और न ही संसार में कोई भी अन्य शक्ति इस धम्मचक्क को रोक सकता है। यह सार्वभौमिक और अपरिवर्तनीय सत्य का प्रतीक बनकर धर्म के चिरस्थायित्व और उसकी सार्वत्रिकता को दर्शाता है।

भारतीय धर्म-दर्शन के इतिहास में चक्र और दुन्दुभि की उपमा अत्यंत गहन और प्रतीकात्मक अर्थ लिए हुए है। हिंदू परंपरा में, हम देखते हैं कि विष्णु के हाथ में चक्र प्रतिष्ठित है, जो उनकी शक्ति, संरक्षण और धर्म के संचालन का प्रतीक है। इसी प्रकार, दुन्दुभि का संबंध भी विष्णु से जुड़ा है, जिसे विजय, उद्घोष और धर्म की घोषणा के प्रतीक रूप में देखा जाता है। यदि हम अश्वत्थ (बोधिवृक्ष) के प्रतीक को हिंदू दृष्टिकोण से देखें, तो उसके मूल में विष्णु, मध्य में शंकर और शीर्ष पर ब्रह्मा प्रतिष्ठित हैं -"**मूले यस्य स्थितो विष्णुर मध्ये तिष्ठति शंकरः, अग्रभागे स्थितो ब्रह्मा।**" ऐसे में, बोधि-वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् जब बुद्ध यह कहते हैं कि वे काशी (जो शिव की नगरी के रूप में प्रसिद्ध है) जा रहे हैं, "धर्म का चक्र घुमाने" के लिए, तो यह मात्र संयोग है या कोई गहरा संकेत - यह प्रश्न विचारणीय है। यदि हम बुद्ध द्वारा प्रयुक्त प्रतीकों, शब्दावली और उनके द्वारा चुने गए स्थानों एवं व्यक्तियों पर गहराई से दृष्टि डालें, तो यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि बुद्ध का दृष्टिकोण अत्यंत सचेत, उद्देश्यपूर्ण और प्रतीकात्मक रहा होगा। ऐसा लगता है कि अपनी धर्म-घोषणा के लिए उन्होंने ऐसे शब्द और प्रतीक चुने, जो तत्कालीन समाज की धार्मिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक चेतना में गहरे पैठे हुए थे। इससे उनका उद्देश्य यह रहा होगा कि उनके उपदेश को व्यापक समाज सहजता से समझ सके और उसका प्रभाव और भी गहन और गंभीर हो। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि बुद्ध का **धम्मचक्कपवत्तन** केवल आध्यात्मिक उद्घोषणा नहीं था, बल्कि एक सांस्कृतिक संवाद भी था, जिसमें उन्होंने परंपरागत प्रतीकों का नये अर्थों और सन्दर्भों में पुनर्पाठ किया।

जहाँ तक **धम्मचक्कपवत्तन** सुत्त के शीर्षक का संबंध है तो इसका तात्पर्य केवल 'धर्मचक्र प्रवर्तन' या 'विधि के चक्र को घुमाना' नहीं है, जैसा कि इसे सामान्यतः अनुवादित किया जाता है। बल्कि इसका अर्थ है 'धर्मराज्य की स्थापना,' अथवा 'धार्मिक शासन के राज्य की आधारशिला रखना।' **धम्मचक्कपवत्तन सुत्त** को केवल उपदेश का प्रारंभ मानना इसकी सीमा को संकीर्ण कर देना होगा। दरअसल, यह बुद्ध द्वारा स्थापित नैतिक-आध्यात्मिक शासन की ऐतिहासिक उद्घोषणा थी, जो केवल व्यक्तिगत मुक्ति की बात नहीं करती, बल्कि सामाजिक और वैश्विक नैतिक व्यवस्था की स्थापना की भी आकांक्षा रखती है। इस सुत्त का अर्थ मात्र उपदेश देना नहीं, बल्कि धर्म के सार्वभौम और शाश्वत शासन की घोषणा करना है। यह बौद्ध धर्म की उस महान दृष्टि को प्रकट करता है, जिसमें धर्म को मानव समाज के नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान का माध्यम माना गया है। इस दृष्टिकोण में, धर्म का चक्र सदा गतिशील रहता है, ताकि संसार को सतत धर्म और न्याय के मार्ग पर अग्रसर रखा जा सके। यह उपदेश केवल एक प्रतीकात्मक कार्यवाही नहीं है, बल्कि धर्म के सार्वभौम शासन के उद्घाटन की घोषणा है।

धम्मचक्कपवत्तन सुत्त में हमारे पास इसमें उन शब्दों का सार है, जिनमें महान भारतीय विचारक और समाज-सुधारक बुद्ध, ने पहली बार अपने नये विचारों का सफलतापूर्वक प्रचार किया। और यह सुत्त हमें कुछ ही संक्षिप्त तथा सटीक वाक्यों में उस अद्भुत प्रणाली का वास्तविक सार प्रस्तुत करता है, जिसने मानव जाति के इतने बड़े हिस्से के धार्मिक इतिहास पर अत्यंत गहरा प्रभाव डाला है। धम्मचक्कपवत्तन सुत्त केवल ऐतिहासिक दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि यह बुद्ध के नवाचारपूर्ण और मौलिक दृष्टिकोण का सजीव प्रमाण है। इसमें न केवल बुद्ध के बौद्धिक पराक्रम का परिचय मिलता है, बल्कि उनके द्वारा प्रतिपादित उस विचार-व्यवस्था का भी, जिसने न केवल भारतीय उपमहाद्वीप, बल्कि सम्पूर्ण एशिया और विश्व की धार्मिक और दार्शनिक धाराओं को नई दिशा दी।

धम्मचक्क की मूल संकल्पना धम्मचक्कपवत्तन, अर्थात् धर्म के चक्र को घुमाने से जुड़ी है। यह धर्म के सिद्धांतों और उसके प्रसार, दोनों को गति देता है जो धर्म के माध्यम से चलता है और धर्माचरण द्वारा गतिशील रहता है। यानी केवल ज्ञान ही नहीं, आचरण भी इसकी धुरी है। जो स्वयं धर्म में स्थिर और प्रतिष्ठित होता है, वही इसे सही मायने में घुमा सकता है और दूसरों को भी धर्म में स्थिर कर सकता है। धम्मचक्क वह घुमाता है जो धर्म में निपुण होता है और दूसरों को भी निपुणता की ओर ले जाता है; जो धर्म की पूर्णता यानी पारमिता को प्राप्त करता है और दूसरों को भी उसकी ओर प्रेरित करता है; जो निर्भीक होकर धर्म का प्रचार करता है और दूसरों में भी वही निर्भीकता उत्पन्न करता है। यह धर्म का सम्मान करने, उसे वंदनीय मानने, उसकी पूजा करने और अवहेलना न करने की भावना से जुड़ा है। यह चक्र हमेशा अविरुद्ध और अपरिवर्तनीय रूप से चलता रहता है, क्योंकि यह केवल दर्शन नहीं हैं, यह नियम है, जिसमें श्रद्धा, वीर्य,

स्मृति, समाधि, प्रज्ञा, इन्द्रियाँ और बल, बोध्यांग और अष्टांगिक मार्ग के अंग सभी प्रवाहित होते हैं। **पटिसम्भिदामग्ग** के अनुसार इसमें वे सभी धम्म-तत्व सम्मिलित हैं, जिन्हें बोधिपक्षीय धर्म कहा जाता है।

समय के साथ धम्मचक्क शब्द का प्रयोग केवल धर्म-प्रचार (देशना) तक सीमित नहीं रहा। धीरे-धीरे इसे बुद्ध के बोध (ज्ञान-प्राप्ति) के लिए भी प्रयुक्त किया जाने लगा। इस संबंध में **पटिसम्भिदामग्ग** अट्ठकथा में कही गई है कि धम्मचक्क की अवधारणा दो स्तरों पर कार्य करती है – "**दुविधं धम्मचक्कं पटिवेधधम्मचक्कं देसनाधम्मचक्कञ्च**"," दो प्रकार का धम्मचक्क है – पटिवेध-धम्मचक्क (प्रत्यक्ष अनुभूति का धम्मचक्क) और देसना-धम्मचक्क (उपदेश का धम्मचक्क)"। पटिवेध-धम्मचक्क बोधिवृक्ष के नीचे होता है और देसना-धम्मचक्क सारनाथ में। धम्म को घुमाना और चक्र को घुमाना- यह पटिवेध-धम्मचक्क कहा गया है। चक्र को घुमाना और धम्म को भी घुमाना कृ यह देसना-धम्मचक्क कहा गया है। इस प्रकार, धम्मचक्क न केवल उपदेशात्मक (देशना) स्तर पर गतिशील होता है, बल्कि यह बुद्ध के आन्तरिक बोध (सत्य के प्रत्यक्ष अनुभव) का भी प्रतीक बन जाता है। धम्मचक्क वह महान चक्र है जो बोधिसत्त्व द्वारा बोधिवृक्ष के नीचे प्राप्त सत्य-बोध (**पटिवेधञाण**) और उसके देशना-ज्ञान (देसनाञाण) के माध्यम से संसार में प्रवाहित होता है।

धम्मचक्क की व्याख्या केवल धर्म-प्रवर्तन (देशना) या बोध (सत्य के प्रत्यक्ष अनुभव) तक ही सीमित नहीं है। पालि अट्ठकथाकारों ने इसमें एक और आयाम जोड़ दिया है – और वह है धम्मचक्क का प्रहारात्मक स्वरूप, अर्थात् इसे एक शस्त्र (**पहरणचक्क**) के रूप में देखना। धम्मचक्क एक ऐसी शक्ति भी है, जिसका प्रयोग अज्ञान, अशुभ वृत्तियों और क्लेशों (मानसिक अशांति, लालच, द्वेष, मोह आदि) के नाश के लिए शस्त्र के रूप में होता है। इस प्रकार धम्मचक्क में दोहरी भूमिका निहित है – कल्याणकारी और प्रकाशमान धर्म-प्रवर्तन, जिसमें बुद्ध द्वारा उपदेशित चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग जैसे तत्व संसार में धम्म-चक्र को घुमाते हैं। विनाशकारी शक्ति के रूप में धम्मचक्क, जो अज्ञान, अशुभ वृत्तियों और क्लेशों के विरुद्ध युद्ध करता है, और अंततः मोक्ष की दिशा में मानवता का मार्ग प्रशस्त करता है। इस प्रकार, धम्मचक्क केवल धार्मिक उपदेश का प्रतीक नहीं, बल्कि मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक शत्रुओं के विरुद्ध संघर्ष और विजय का भी प्रतीक है। यह बौद्ध धर्म के गहरे क्रान्तिकारी पक्ष को उजागर करता है, जिसमें धम्म, करुणा और ज्ञान के साथ-साथ विकृतियों और क्लेशों के विरुद्ध एक शस्त्र भी बनता है।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि धम्मचक्कपवत्तन केवल एक ऐतिहासिक घटना या प्रतीकात्मक उपमा भर नहीं है, बल्कि यह वह क्रांतिकारी क्षण है, जिसने सम्पूर्ण मानव जाति की सोच, आस्था और आध्यात्मिक पथ को एक नई दिशा और नया आलोक प्रदान किया। आषाढ़ पूर्णिमा का यह दिन अतुलनीय इस कारण है कि इसी दिन तथागत बुद्ध ने न केवल अपने बोधि-ज्ञान का उद्घाटन किया, बल्कि संसार को वह अमूल्य धरोहर सौंपी, जो दुःख और उसके निरोध का मार्ग दिखाती है। यह धम्म केवल बौद्ध अनुयायियों तक सीमित न रहकर आज सम्पूर्ण मानवता की साझी विरासत बन चुका है। थेरवाद परम्परा के अनुसार, धम्मचक्क तीन स्तरों पर कार्य करता है – पटिवेध-धम्मचक्क (बोध का चक्र), देसना-धम्मचक्क (उपदेश का चक्र), और पहरणचक्क (क्लेशों का नाश करने वाला चक्र)। पहला चक्र बुद्ध के भीतर आत्मानुभूति और सत्य-बोध का प्रतीक है; दूसरा चक्र संसार में उस बोध के प्रचार और प्रसार का; और तीसरा चक्र बुद्ध की शिक्षा के अनुपालन के माध्यम से हम सभी के भीतर विद्यमान क्लेशों के नाश का साधन है। इन तीनों चक्रों का एक ही लक्ष्य है – अविद्या और क्लेशों का विनाश और कल्याण का प्रतिष्ठापन। इतिहास, पुरातत्व और शास्त्रीय साक्ष्य यह प्रमाणित करते हैं कि धम्मचक्कपवत्तन न केवल बुद्ध के प्रथम उपदेश की घटना थी, बल्कि सम्पूर्ण बौद्ध परम्परा के लिए एक घोषणापत्र भी है। धम्मचक्कपवत्तन के समय ही बुद्ध ने प्रथम बार मध्य-मार्ग, चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग जैसे सिद्धांत प्रतिपादित किए। इन सिद्धांतों में न केवल दुःख का निदान निहित है, बल्कि मानव जीवन को सन्मार्ग पर चलाने की अद्भुत कला और विज्ञान भी छिपा है। इसीलिए आषाढ़ पूर्णिमा केवल एक पर्व नहीं, बल्कि वह पुण्यतिथि है, जो हमें हर वर्ष यह स्मरण कराती है कि ज्ञान, करुणा और सत्य का चक्र निरंतर घूम रहा है और हम सब उसके सहभागी हैं। यह चक्र हमें सिखाता है कि धर्म केवल व्यक्तिगत मुक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लोककल्याण, नैतिक उत्थान और सामाजिक न्याय की एक जीवंत प्रक्रिया है। इसलिए, आज जब हम धम्मचक्कपवत्तन का स्मरण करते हैं, तब हम केवल अतीत की एक घटना का उत्सव नहीं मना रहे, बल्कि यह प्रतिज्ञा कर रहे हैं कि उस धम्मचक्क को, जिसे बुद्ध ने प्रवर्तित किया था, हम भी अपने आचरण, विचार और करुणा के माध्यम से निरंतर गतिशील रखें। यही तथागत के चरणों में हमारा सच्चा श्रद्धा-सुमन है।

बुद्धं सरणं गच्छामि। धम्मं सरणं गच्छामि। सङ्घं सरणं गच्छामि।

■

भारतीय धर्म-दर्शन के इतिहास में चक्र और दुन्दुभि की उपमा अत्यंत गहन और प्रतीकात्मक अर्थ लिए हुए है। हिंदू परंपरा में, हम देखते हैं कि विष्णु के हाथ में चक्र प्रतिष्ठित है, जो उनकी शक्ति, संरक्षण और धर्म के संचालन का प्रतीक है। इसी प्रकार, दुन्दुभि का संबंध भी विष्णु से जुड़ा है, जिसे विजय, उद्घोष और धर्म की घोषणा के प्रतीक रूप में देखा जाता है। यदि हम अश्वत्थ (बोधिवृक्ष) के प्रतीक को हिंदू दृष्टिकोण से देखें, तो उसके मूल में विष्णु, मध्य में शंकर और शीर्ष पर ब्रह्मा प्रतिष्ठित है।

रेशम की डोर में आत्मनिर्भरता की चमक

मोनिका चौहान
शिक्षिका

रक्षाबंधन का पर्व नजदीक है और उत्तराखंड के कुमाऊं अंचल की पहाड़ियों में बसी कुछ महिलाएं इस बार इस त्यौहार को खास बनाने में जुटी हैं। ये महिलाएं “रेशम -एक नई पहल” नामक स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं । कुछ समय पहले तक जो महिलाएं सिर्फ घर और खेतों तक सीमित थीं, अब रेशम की कोकून से लेकर सुंदर राखियों तक का सफर तय कर चुकी हैं।

इन महिलाओं ने तय किया कि इस रक्षाबंधन पर कलाई पर बंधने वाली राखी सिर्फ एक रेशमी धागा नहीं होगी, बल्कि उसमें उनकी मेहनत, हुनर और आत्मनिर्भरता की चमक भी झलकेगी। उन्होंने रेशम के कीड़ों से धागा निकाला, उसे रंग-बिरंगे धागों और मोतियों से सजाया और फिर उससे आकर्षक राखियां तैयार कीं।

परिणाम सामने था। सिर्फ चार दिनों में 25,000 रुपये तक के ऑर्डर मिल चुके हैं। दिल्ली और देहरादून जैसे शहरों से मांग आने लगी है। हर महिला की आंखों में अब आत्मविश्वास और गर्व की चमक दुखाई दे रही है।

वहीं उत्तर प्रदेश के एटा जिले में भी कुछ ऐसा ही बदलाव देखा जा रहा है। वहां की ग्रामीण महिलाएं भी एनआरएलएम के अंतर्गत सक्रिय महिला समूहों में शामिल होकर राखी निर्माण में लगी। मुख्य विकास अधिकारी के निर्देशन में वे पारंपरिक और आकर्षक राखियां तैयार कर रही है। इन राखियों को बेचने के लिए विकास भवन और अन्य सरकारी कार्यालयों में राखी मेले लगाए जाने की तैयारी चल रही है, जिससे महिलाओं को बाज़ार और आमदनी दोनों मिल सके।

इस बार जो राखी कलाई पर बंधेगी, वह सिर्फ प्रेम नहीं, बल्कि मेहनत, आत्मबल और आत्मनिर्भर भारत का सपना भी साथ लाएगी। अब राखी केवल एक रेशमी डोरी नहीं रही, वह महिला उद्यमिता की प्रेरक कहानी बन चुकी है, जिसमें हर धागा कुछ कहता है।

गोरखपुर के छात्रों ने बनाया ‘ग्रीन बम’ जो फूटे तो धरती पर हरियाली छा जाए

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर शहर से एक ऐसी प्रेरणादायक खबर सामने आई है जो तकनीक और पर्यावरण की अद्भुत संगम कथा कहती है। यहां के इंस्टीट्यूट अहफ टेक्नोलहजी एंड मैनेजमेंट के दो बीटेक छात्रों, शशांक और शिवेश, ने मिलकर एक ऐसा अनोखा ‘बम’ बनाया है, जो विनाश नहीं, बल्कि हरियाली फैलाने के लिए बना है। इस बम का नाम है - ग्रीन बम।

करीब 5 फीट लंबा और 25 किलो वजनी यह बम अपने भीतर आम, नीम, अमरूद जैसे पेड़ों के साथ-साथ औषधीय पौधों के हजारों बीज समेटे होता है। इन बीजों को विशेष बायो न्यूट्रिशन कैप्सूल्स में रखा गया है, जिससे वे जमीन पर गिरते ही अंकुरित होने लगते हैं। जब इसे ड्रोन या हवाई जहाज़ से किसी क्षेत्र में गिराया जाता है, तो यह हवा में फूटते ही बीजों की वर्षा करता है और कुछ ही समय में वहां पेड़-पौधों की हरियाली नजर आने लगती है।

इस ग्रीन बम की खासियत केवल बीजों तक सीमित नहीं है। इसमें आधुनिक तकनीकों का भी बेहतरीन उपयोग किया गया हैकृमोबाइल नेटवर्क, ग्रीन लाइट सिग्नल और इंटरनेट से नियंत्रित प्रणाली” जैसे फीचर्स इसे स्मार्ट और उपयोगी बनाते हैं। इसे बनाने में छात्रों को दो साल का समय लगा और कुल 1.25 लाख रुपये की लागत आई। कॉलेज के शिक्षक, तकनीकी विशेषज्ञ और निदेशक इस परियोजना से बेहद प्रभावित हैं। उनका मानना है कि यह ग्रीन बम पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बड़ी सौगात साबित हो सकता है।

शशांक और शिवेश का उद्देश्य युद्ध के लिए हथियार बनाना नहीं था, बल्कि ऐसा यंत्र तैयार करना था जो प्रकृति को फिर से संजीवनी दे। उनका मानना है कि सच्ची देशभक्ति वही है जो जीवन दे, विनाश नहीं। यह ग्रीन बम एक संदेश हैकृकि यदि युवा चाहें, तो तकनीक का उपयोग न केवल जीवन आसान बनाने में, बल्कि धरती को बचाने में भी कर सकते हैं। यह नवाचार हमें सिखाता है कि सृजन की राह पर चलने वाले हाथ, इतिहास बदलने की ताकत रखते हैं।

भारत और विश्व व्यापार
एक विकासशील राष्ट्र की वैश्विक छलांग

डॉ. अभिषेक प्रताप सिंह
सहायक प्रोफेसर, देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विवि.

भारत का वैश्विक व्यापार परिदृश्य पिछले दो दशकों में नाटकीय रूप से बदला है। यह बदलाव केवल व्यापार की मात्रा में वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उस मानसिकता और दृष्टिकोण में परिवर्तन को भी दर्शाता है, जिसके माध्यम से भारत स्वयं को वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में स्थान देने का प्रयास कर रहा है। भारत, जो कभी एक आयात-प्रतिबंधित, आत्मनिर्भरता-आधारित प्रणाली में विश्वास करता था, अब एक सक्रिय, प्रतिस्पर्धी और नवाचार-उन्मुख वैश्विक भागीदार बनता जा रहा है।

1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद, भारत ने न केवल अपनी आर्थिक सीमाएं खोलीं, बल्कि उसने वैश्विक व्यापार को आर्थिक विकास का केंद्रीय आधार बनाना शुरू कर दिया। आज भारत न केवल अपने उत्पादों को विदेशों में बेचने में सक्षम है, बल्कि वह सेवा क्षेत्र, डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर, तकनीकी नवाचार और रणनीतिक साझेदारियों के जरिए वैश्विक व्यापार में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहा है।

भारत का वैश्विक व्यापार आकार में तो निश्चित रूप से कई गुना बढ़ा है, लेकिन इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है इसका गुणात्मक विकास। इस परिवर्तन का आकलन केवल निर्यात और आयात के आंकड़ों से नहीं किया जा सकता। इसके लिए यह समझना होगा कि भारत किस तरह से वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं, डिजिटल व्यापार, और सामरिक आर्थिक भागीदारी में अपनी स्थिति को सशक्त बना रहा है।

भारत अब उन चुनिंदा देशों में शामिल हो चुका है जो वैश्विक व्यापार को केवल वस्तुओं के विनिमय के रूप में नहीं, बल्कि कूटनीतिक रणनीति, आर्थिक सुरक्षा, और वैश्विक प्रभाव के साधन के रूप में देखते हैं।

प्रमुख व्यापारिक साझेदार : भारत की व्यापारिक कूटनीति ने उसे पारंपरिक भागीदारों से आगे बढ़ाकर भू-राजनीतिक संतुलनकारक की भूमिका में ला दिया है। संयुक्त राज्य अमेरिका भारत का सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य बन गया है, विशेष रूप से IT सेवाओं, फार्मास्यूटिकल्स और परिधान के क्षेत्र में। चीन भारत के आयात में शीर्ष स्थान पर है विशेषकर मशीनरी, इलेक्ट्रॉनिक्स और केमिकल्स के क्षेत्र में। संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब जैसे खाड़ी देश भारत के साथ द्विपक्षीय व्यापार को नई ऊंचाइयों पर ले जा चुके हैं। रूस के साथ भारत ने ऊर्जा और रक्षा व्यापार को आगे बढ़ाते हुए रणनीतिक सहयोग को व्यापार में बदल दिया है। यूरोपीय संघ और यूनाइटेड किंगडम के साथ चल रही FTA वार्ताएं, भारत को उच्च मूल्य वाले बाजारों तक पहुंच दिलाने में सहायक होंगी।

ये साझेदारियां न केवल व्यापार के आंकड़े बढ़ाती हैं, बल्कि भारत की वैश्विक राजनीतिक स्थिति को भी मजबूत करती हैं। भारत का आयात, विशेष रूप से खनिज ईंधन (कच्चा तेल), सोना, और इलेक्ट्रॉनिक्स में केंद्रित रहा है

इस आयात संरचना को स्थानीयकरण और 'मेक इन इंडिया' जैसी योजनाओं से धीरे-धीरे संतुलित किया जा रहा है।

निर्यात परिदृश्य और विविधीकरण : भारत के निर्यात में अब केवल पारंपरिक वस्तुएं जैसे चावल, रत्न-आभूषण या वस्त्र शामिल नहीं हैं। हाल के वर्षों में कई उभरते क्षेत्र तेजी से बढ़े हैं फार्मास्यूटिकल्स भारत को "विश्व की फार्मेसी" कहा जाता है। कोविड-19 महामारी के दौरान वैश्विक वैक्सीन आपूर्ति में भारत की भूमिका निर्णायक रही। इलेक्ट्रॉनिक्स और स्मार्टफोन, भारत का स्मार्टफोन निर्यात हाल ही में 40 प्रतिशत से अधिक की वार्षिक वृद्धि दर्शा चुका है। IT सेवाएं और SaaS कंपनियां- TCS, Infosys, और Wipro जैसे ब्रांड वैश्विक डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र के अहम स्तंभ

बन चुके हैं।

कृषि उत्पाद : भारत विश्व का सबसे बड़ा चावल निर्यातक है, और मसालों तथा दालों की वैश्विक मांग निरंतर बनी हुई है। इस विविधता ने भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में एक स्थायी और भरोसेमंद भागीदार के रूप में स्थापित किया है।

भारत की सबसे बड़ी व्यापारिक शक्ति उसका सेवा क्षेत्र है। वैश्विक सेवा व्यापार में भारत की हिस्सेदारी लगभग 5 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है, और वह अमेरिका, चीन, जर्मनी जैसे विकसित देशों की कतार में खड़ा है। IT सेवाओं में भारत एक ग्लोबल लीडर है, जहां ग्राहक सेवा, क्लाउड सॉल्यूशन और डेटा एनालिटिक्स जैसी सेवाएं दी जा रही हैं। चिकित्सा पर्यटन भारत की उच्च गुणवत्ता, कम लागत वाली स्वास्थ्य सेवाएं इसे स्वास्थ्य पर्यटन का प्रमुख केंद्र बनाती हैं। कानूनी, लेखा और परामर्श सेवाएं भारत के पेशेवर सेवा प्रदाता यूरोप और अमेरिका में अच्छी प्रतिष्ठा बना चुके हैं। डिजिटल भुगतान जैसे UPI और पहचान प्रणाली जैसे आधार, ने भारत को डिजिटल व्यापार नवाचार का उदाहरण बना दिया है।

बड़े नीतिगत सुधार : भारत ने व्यापार में अपनी प्रतिस्पर्धा को मजबूत करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण नीतिगत कदम उठाए हैं – 'मेक इन इंडिया' ने घरेलू विनिर्माण को प्रोत्साहन दिया। 'PLI योजना' ने हाई-टेक और निर्यातोन्मुख क्षेत्रों में उत्पादन को गति दी। FTA समझौते- UAE, ऑस्ट्रेलिया, और EFTA के साथ हुए समझौते भारत को बेहतर बाजार पहुंच प्रदान करते हैं। डिजिटल परिवर्तन, रूपये में व्यापार, UPI इंटरनेशनल, और सीमा-पार डिजिटल भुगतान भारत की व्यापारिक पहचान को नया स्वरूप दे रहे हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था देश में मजबूत विकास और व्यापार के समग्र दृष्टिकोण में सुधार और निवेश के संकेत के साथ आशावादी रुप से बढ़ रही है। सरकार के नये प्रयासों एवं पहलों की मदद से निर्माण क्षेत्र में काफी सुधार हुआ है। निर्माण को बढ़ावा देने एवं संवर्धन के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 25 सितम्बर 2014 को 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम की शुरुआत की जिससे भारत को महत्वपूर्ण निवेश एवं निर्माण, संरचना तथा अभिनव प्रयोगों के वैश्विक केंद्र के रुप में बदला जा सके।

इसके अलावा मोदी सरकार की नेतृत्व में भारत के व्यापारिक नीति में कई देशों के साथ फ्री ट्रेड एग्रीमेंट थ्न्ं को बढ़ावा दिया है. प्रधानमंत्री के आगामी ब्रिटेन यात्रा में भारत और ब्रिटेन के बीच जिं पर हस्ताक्षर करने पर सहमति बनी है, जो कि बड़ी कूटनीतिक सफलता होगी.

भारत का लक्ष्य है कि वह 2030 तक 2 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के निर्यात को पार करे। इसके लिए उसे कई क्षेत्रों पर केंद्रित होना होगा जिसमें और बुनियादी ढाँचा सुधार, लॉजिस्टिक्स, बंदरगाह, और सीमा शुल्क दक्षता में सुधार। इसके साथ ही IT और फार्मा से आगे, नवीकरणीय ऊर्जा, एयरोस्पेस, और जैव प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों का विकास।

आज भारत को जरूरत है कि वैश्विक मानकों के अनुरूप उत्पादन बढ़ाना। इसके अलावा व्यापार और टैरिफ नीति का सरलीकरण, निर्यातकों के लिए व्यापार को सहज बनाना।

भारत का वैश्विक व्यापार आज केवल वस्तुओं या सेवाओं के लेन-देन तक सीमित नहीं है। यह उस राष्ट्र की पहचान और भविष्य की रूपरेखा है जो आर्थिक, तकनीकी और कूटनीतिक तीनों क्षेत्रों में विश्व मंच पर अपनी स्थिति को लगातार मजबूत कर रहा है।

वैश्विक चुनौतियों के बीच, भारत की रणनीतिक स्थिति, नीतिगत सुधार, और नवाचार-आधारित दृष्टिकोण उसे केवल एक 'उभरती अर्थव्यवस्था' नहीं, बल्कि विश्व व्यापार का भविष्य-निर्माता बना सकता है। ■

भारत की विशेष उपलब्धियां

- ♦ आर्थिक विकास 1947 में GDP 2.7 लाख करोड़ (लगभग) → 2025 में GDP: 300 लाख करोड़ (अनुमानित),
- ♦ विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था
- ♦ विश्व के स्टार्टअप इकोसिस्टम में तीसरा स्थान
- ♦ दुनिया के शीर्ष दवा निर्यातकों में तीसरा स्थान
- ♦ महिला साक्षरता 1951: 8-9% → 2024: 70%+
- ♦ जीवन प्रत्याशा 1950: 32 वर्ष → 2024: 70+ वर्ष
- ♦ अंतरिक्ष प्रक्षेपण 400+ उपग्रह सफलतापूर्वक प्रक्षेपित
- ♦ क्यू एस यूनिवर्सिटी रैंकिंग चौथा सर्वाधिक प्रतिनिधित्व वाला देश
- ♦ कृषि PM-KISAN योजना- 12 करोड़ किसानों को प्रत्यक्ष लाभ
- ♦ योग 2014 योग को अंतर्राष्ट्रीय पहचान- 21 जून को 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' घोषित

मौसम और अध्यात्मिकता का आदर्श मिश्रण : अगस्त

नीलम भागी
लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर एवं ट्रेवलर

अगस्त का महीना एक ऐसा संगम है जहाँ ऋतु परिवर्तन, अध्यात्मिकता, लोक परंपराएं और राष्ट्रीय चेतना एक साथ प्रकट होती हैं। यह केवल वर्षा ऋतु के अंत का संकेत नहीं, बल्कि विविध सांस्कृतिक और धार्मिक आयोजनों का शुभ अवसर भी है।

मुंबई में नेहा के घर पर चेन्नई से उसकी मां माया मनपुरिया और बैंगलोर से विन्नी आई थीं। बातों-बातों में त्योहारों पर चर्चा छिड़ गई। वंदना दीदी बोलीं- ”देवता सो रहे हैं, इसलिए शाम को दिया जलाने की उतनी जल्दी नहीं रहती।“ माया जी ने बताया- ”देवशयनी एकादशी को भगवान को फल-फूल, मूली और गन्ना अर्पित कर सुलाने का गीत गाकर पूजा करते हैं। मारवाड़ी, गुजराती और महाराष्ट्रीयन परंपराओं में एक खास नियम होता है कि रात में दीप नहीं जलाया जाता।“

श्रावण मास की एकादशी ‘पुत्रदा एकादशी’ कहलाती है, जिसमें विष्णु-लक्ष्मी की पूजा कर संतान प्राप्ति और उन्नति की कामना की जाती है। सावन के सोमवार को शिव मंदिरों में विशेष पूजा होती है। इस बार ८ अगस्त को सावन का चौथा सोमवार है, जो ‘वर लक्ष्मी व्रत’ का भी दिन है। मुख्यत: दक्षिण भारत में विवाहित महिलाएं देवी लक्ष्मी की पूजा कर अपने परिवार की सुख-समृद्धि की कामना करती हैं।

9 अगस्त - रक्षाबंधन : भाई-बहन के स्नेह का प्रतीक रक्षाबंधन सावन की पूर्णिमा को मनाया जाता है। द्रौपदी द्वारा कृष्ण की अंगुली पर चीर बाँधने की कथा इसका आधार है। यह पर्व केवल पारिवारिक नहीं, सामाजिक और सांस्कृतिक रिश्तों को भी सशक्त करता है। भाई-बहन का यह मिलन उत्सव, विशेष रूप से लोक संस्कृति से जुड़ा है, जिसमें आत्मीयता, जिम्मेदारी और सुरक्षा की भावना है।

संघ परिवार में डॉ. हेडगेवार ने भगवा ध्वज पर रक्षासूत्र बांधकर समस्त हिन्दू समाज को एकसूत्र में पिरोने का संकल्प दोहराया- “धर्मो रक्षितः रक्षितः।” अर्थात् जब हम धर्म की रक्षा करते हैं, तब वही धर्म हमारी रक्षा करता है। यह पर्व सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक जागरूकता का प्रतीक है।

हल षष्ठी (ब्रज क्षेत्र) : बलराम जी के जन्मदिवस पर मनाया जाने वाला यह पर्व मथुरा-वृंदावन क्षेत्र में विशेष रूप से मनाया जाता है। खेत में हल न चलाने और महुए के व्यंजनों के साथ यह उत्सव मातृत्व और कृषि संस्कृति से जुड़ा है।

15 अगस्त - स्वतंत्रता दिवस : भारतवासियों के लिए यह राष्ट्रीय गर्व का दिन है। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री देश को संबोधित करते हैं। यह दिन देशभक्ति, बलिदान और नागरिक चेतना को समर्पित है।

18 अगस्त - जन्माष्टमी : कृष्ण जन्मोत्सव केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक रंगों से भरपूर उत्सव बन चुका है। दही हांडी उत्सव में युवाओं की टोलियाँ उत्साह से भाग लेती हैं। मथुरा-वृंदावन से सीधा प्रसारण देश-दुनिया तक पहुँचता है।

गोगा नवमीं : जम्मू-कश्मीर के कटरा क्षेत्र में स्थित गोगा वीर जी मंदिर सभी धर्मों के लोगों की आस्था का केंद्र है। लोक देवता गोगा पीर की पूजा बच्चों की रक्षा के लिए की जाती है। महिलाएं मिट्टी के घोड़े पर सवार गोगा वीर जी की प्रतिमा बनाकर प्रार्थना करती हैं। हरियाणा, पंजाब, हिमाचल और राजस्थान में यह पर्व धूमधाम से मनाया जाता है।

23 अगस्त - बैल पोला : महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और कर्नाटक के किसान इस दिन मवेशियों का धन्यवाद करते हैं। बैलों को सजाया जाता है, जुलूस निकाला जाता है, और पूजा कर उन्हें विश्राम दिया जाता है। यह हमारी संस्कृति में पशुधन के प्रति सम्मान और कृतज्ञता का उत्सव है।

23 अगस्त-बोंडेरम उत्सव (गोवा): दिवार द्वीप पर मनाया जाने वाला यह त्योहार पुर्तगाली शासन के विरुद्ध ग्रामवासियों की सांस्कृतिक विजय का प्रतीक है। झांकियों और नृत्यों से सड़कों पर उत्सव मनाया जाता है।

25 अगस्त - वराह जयंती : विष्णु के वराह अवतार का यह पर्व तिरुपति (आंध्र प्रदेश) के वराहस्वामी मंदिर में विशेष रूप से मनाया जाता है। नारियल जल से भगवान का अभिषेक कर पूजा की जाती है। यह क्षेत्र वराहक्षेत्र कहलाता है।

26 अगस्त - हरतालिका तीज (उत्तर भारत) / गौरी हब्बा (दक्षिण भारत) : यह पर्व शिव-पार्वती के पुनर्मिलन का प्रतीक है। महिलाएं सौभाग्य, पति की लंबी उम्र और पारिवारिक सुख के लिए व्रत करती हैं। मायके से सिंधारा आता है। हाथों में मेंहदी, हरे वस्त्र और झूलों की रंगत से यह पर्व हरियाली और स्त्री सशक्तिकरण का प्रतीक बन गया है।

भाई बहन के प्रेम का प्रतीक रक्षा बंधन सावन मास की पूर्णिमा को (9 अगस्त) मनाया जाता है। भगवान कृष्ण ने जब शिशुपाल का वध किया था तो उनकी अंगुली से रक्त बहता देखकर द्रोपदी ने अपनी साड़ी चीर कर, उसका टुकड़ा उनकी अंगुली पर बांधा था। तभी से रक्षा बंधन मनाने की परंपरा है।

26 अगस्त से 5 सितंबर - ओणम (केरल) : मलयाली समाज द्वारा मनाया जाने वाला यह त्योहार राजा महाबली की धरती पर वापसी की स्मृति में मनाया जाता है। यह नई फसल का उत्सव भी है। ओणम में पारंपरिक नाव दौड़, फूलों की रंगोली, नृत्य और भोज (ओनसद्या) शामिल होता है, जिसमें केले के पत्ते पर 29 व्यंजन परोसे जाते हैं।

27 अगस्त - गणेश चतुर्थी : तिलक जी द्वारा प्रारंभ किया गया यह पर्व राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता का प्रतीक बन गया। पहले जो देवता केवल पेशवाओं तक सीमित थे, उन्हें तिलक ने जनसामान्य के आंगन में लाकर पूज्य बनाया। आज सोसायटी में भव्य पंडाल बनते हैं, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं और गणपति के स्वागत में ढोल-नगाड़े बजते हैं।

28 अगस्त-ऋषि पंचमी/ विश्वकर्मा पूजा (केरल) : यह पर्व सप्तऋषियों को समर्पित है। समाज निर्माण में इनके योगदान की स्मृति में यह दिन कृतज्ञता के साथ मनाया जाता है। दक्षिण में इसे विश्वकर्मा पूजा के रूप में मनाते हैं।

31 अगस्त -राधाष्टमी : ब्रज क्षेत्र में यह पर्व कीर्तन, भजन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों से सजीव होता है। स्वामी हरिदास ध्रुपद परंपरा के जनक और तानसेन के गुरु का जन्मदिन भी इसी दिन होता है। उनके सम्मान में आयोजित महोत्सव में देशभर के संगीतज्ञ भाग लेते हैं।

अगस्त का महीना भारतीय जीवन के विविध रंगों को समेटे होता है। इसमें अध्यात्म, सामाजिक बंधन, ऋषि परंपरा, कृषि संस्कृति, लोक आस्था और राष्ट्रीय चेतना, सबका समावेश है। यह महीना हमारे संस्कार, श्रद्धा, सम्मान और सामूहिकता की अभिव्यक्ति है। ■

एआई की दुनिया
2025 की चौंकाने वाली क्रांतियां

आभांशु द्विवेदी
छात्र, पत्रकारिता एवं जनसंचार
आईएमएस, गाजियाबाद

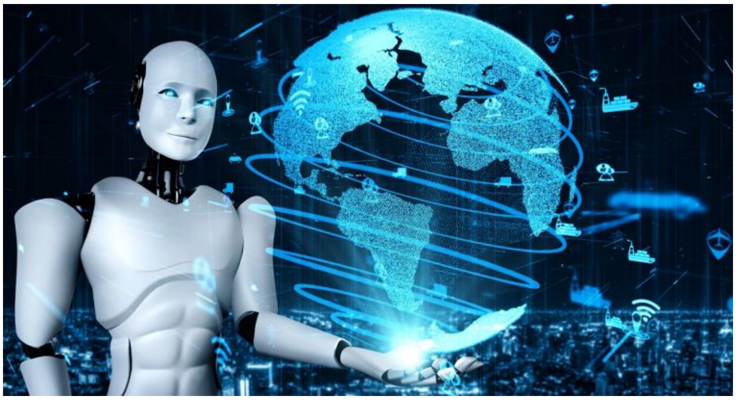

आपने कभी सोचा है कि कोई मशीन न केवल आपकी बातें समझे बल्कि आपके चेहरे के हाव-भाव से आपकी भावनाएं समझ ले? क्या आपने कभी ऐसी दुनिया की कल्पना की है जहां रोबोट्स जो आपका इलाज करें, गाड़ियां खुद-ब-खुद चलें, जहां मोबाइल आपको सिर्फ कॉल करने के लिए नहीं, बल्कि आपके मूड के हिसाब से सलाह देने लगे? अगर आपने ऐसा सोचा है और आप इसे कल्पना मात्र समझते हैं तो जान लीजिए कि ये अब 2025 में हकीकत बन चुका है और यही है एआई की नई दुनिया।

हम एक ऐसे दौर में कदम रख चुके हैं जहां एआई अब केवल इंसानों की नकल नहीं करता, बल्कि खुद की सोच और निर्णय क्षमता के साथ इंसानों का सहयोगी, सलाहकार और कहीं-कहीं प्रतिस्पर्धी भी बन चुका है। स्वास्थ्य, शिक्षा, वित्त, खुदरा बाजार और ई-कॉमर्स जैसे अनेक क्षेत्र, ये सभी जो हमारी रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा हैं आज इन सभी क्षेत्रों में एआई ने अपने वर्चस्व से सब कुछ बदल दिया है।

बात करें अगर स्वास्थ्य और जीवन विज्ञान के क्षेत्र में, तो नई एआई तकनीकों की मुख्य जिम्मेदारियों में बीमारियों का सटीक इलाज करना, व्यक्तिगत चिकित्सा को सक्षम बनाना, नई दवाओं की खोज को तेज करना, और अन्य कई महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं को अधिक कुशल बनाना शामिल हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद से कैंसर जैसी बीमारियों का इलाज ढूंढना, विलुप्त हो चुके जानवरों को वापस लाना और जेनेटिक्स की पढ़ाई कर उसके रहस्यों को सुलझाना भी एक प्रमुख उद्देश्य है।

वहीं वित्तीय क्षेत्र में एआई-आधारित एल्गोरिदम का उपयोग जोखिम मूल्यांकन को सुधारने, धोखाधड़ी की पहचान को अधिक सटीक बनाने, और ग्राहक सेवा को बेहतर करने के लिए किया जा रहा है। खुदरा व्यापार और ई-कॉमर्स में एआई का उपयोग मांग का पूर्वानुमान लगाने, व्यक्तिगत मार्केटिंग की रणनीतियाँ तैयार करने, और सप्लाई चेन संचालन को कुशल बनाने में हो रहा है।

कुल मिलाकर, इन क्षेत्रों में एआई की भागीदारी यह साबित करती है कि हम तकनीकी रूप से कितनी तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। 2025 की अगर हम बात करें तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने अपने स्वरूप को पूरी तरह बदल लिया है। जहां पहले लोगों के छोटे-मोटे कामों के लिए इसका निर्माण हुआ था आज ये सलाहकार, पर्यावरण रक्षण, और देश की अर्थव्यवस्था पर भी अपना कब्जा जमा चुका है। 2025 में AI ने जो विकास किए हैं, वे पिछले दशकों की सीमाओं को तोड़ चुके हैं। जनरेटिव एआई, इमोशनल एआई, एआई एजेंट्स, और हाइपर-ऑटोमेशन जैसी अवधारणाएं अब प्रयोगशालाओं तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि ये अब अस्पतालों, स्कूलों, अदालतों, और घरों तक पहुंच चुकी हैं। यह लेख आपको ले चलेगा AI की उस नई दुनिया में, जहां तकनीक सोचती है, महसूस करती है, और अपने आप निर्णय लेती है। आइए जानते हैं कि कैसे एआई 2025 में मानव सभ्यता के अगले अध्याय की पटकथा लिख रहा है।

प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) **और संवादात्मक एआई की उन्नति :** नैचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग ने आज ऐसी ऊँचाइयों को छू लिया है, जिसकी पहले केवल कल्पना की जाती थी। अब एआई न केवल हमारी भाषा को समझने में सक्षम है, बल्कि भावनाओं की बारीकियों, संदर्भों, और जटिल संवादों को भी बेहद सहजता से समझ सकता है। संवादात्मक एआई अब सिर्फ सवालों के जवाब देने वाला चैटबॉट नहीं रहा, बल्कि यह एक ऐसा डिजिटल साथी बन चुका है, जो आपके मूड, जरूरत और भाषा के लहजे को पहचान कर वैसा ही उत्तर देता है बिल्कुल एक इंसान की तरह। इन तकनीकों ने ग्राहक सेवा,

शिक्षा और मनोरंजन जैसे क्षेत्रों में एक बड़ी क्रांति ला दी है। अब ग्राहकों को घंटों तक कॉल पर इंतजार नहीं करना पड़ता, एआई एजेंट तुरंत समाधान देते हैं। शिक्षा में, छात्र अब ऐसे एआई ट्यूटर से पढ़ सकते हैं जो उनके स्तर, रफ्तार और समझ के अनुसार पढ़ाई को ढाल सकता है साथ ही बिना किसी झिझक के छात्र भी सवाल पूछ सकते हैं। और मनोरंजन की बात करें तो उसमें तो एआई ने अपना दबदबा बहुत पहले से बना लिया था। व्यक्तिगत रुचि के अनुसार इंस्टाग्राम में रील्स दिखाना, सर्च सजेशन देना, नई-नई कहानियां सुनाना, कविताएं रचना और संवाद करना।

एआई और स्वास्थ्य : आज एआई ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक नई क्रांति ला दी है। अब आपका इलाज आपके जीन, आपकी आदतें, आपकी पिछली मेडिकल हिस्ट्री और जीवनशैली को समझकर तय किया जा सकेगा। एआई के व्यक्तिगत चिकित्सा मॉडल में एआई आधारित एल्गोरिदम अब इतने सक्षम हैं कि ये विशाल मात्रा में मेडिकल डेटा जैसे जेनेटिक कोड, स्कैन रिपोर्ट, दवाओं की प्रतिक्रियाएं, और हजारों मरीजों का इतिहास एक साथ पढ़ सकते हैं। इसके आधार पर यह सिस्टम हर मरीज के लिए एक अनोखा उपचार प्लान बना सकता है, जो उसकी जरूरतों और शरीर की प्रतिक्रिया के अनुसार सबसे बेहतर होता है। इतना ही नहीं, एआई अब भविष्य की बीमारियों को पहचानने में भी हमारी मदद कर रहा है। यानी बीमारी के लक्षण प्रकट होने से पहले ही, सिस्टम ये बता सकता है कि किसी व्यक्ति में किन बीमारियों का खतरा है और कब और इसका लाभ यह है कि समय रहते इलाज शुरू हो जाता है, जिससे जानें बचती हैं और इलाज की लागत भी घटती है।

एक घटना की बात करें तो नतालिया टैरीयन की, जो अमेरिका के चार्लोट, नॉर्थ कैरोलिना की एक 28 वर्षीय गर्भवती महिला थीं। एक रात जब उनका जबड़ा कसने जैसा महसूस हुआ तो उन्होंने चैट जीपीटी से इस बारे में बात की और चैट जीपीटी ने उन्हें उनकी बीमारी के बारे में बताते हुए तुरंत अस्पताल जाने की सलाह दी जहां जाकर पता चला कि उन्हें प्री-एक्लेम्पसिया का निदान हुआ जिसके बाद उनकी सर्जरी कर उनकी और उनके बच्चे की जान बचा ली गई।

AlphaGenome इस दिशा में एक क्रांतिकारी पहल है। यह एक अत्याधुनिक AI मॉडल है जिसे इंसानी जीनोम को बेहतर समझने के लिए विकसित किया गया है। AlphaGenome डीएनए के जटिल अनुक्रमों में छिपे हुए परिवर्तन को पहचानने में सक्षम है, जो यह निर्धारित करते हैं कि कौन से जीन सक्रिय होंगे और कौन से नहीं। यह न केवल बीमारियों की जड़ों को समझने, बल्कि इलाज को और अधिक व्यक्तिगत और सटीक बनाने में बेहद मददगार है। इसकी मदद से कैंसर जैसी बीमारियों का इलाज भी ढूंढा जा सकता है।

एजेंटिक एआई : एजेंटिक एआई उन सिस्टम्स को कहा जाता है जो लगातार इंसानी निगरानी के बिना, स्वयं निर्णय लेकर तय किए गए लक्ष्यों को पूरा करने में सक्षम होते हैं। 2025 में, यह तकनीक अब कल्पना नहीं रही, बल्कि व्यावहारिक रूप से हमारे जीवन के अनेक क्षेत्रों में कार्यरत है। अब एआई केवल निर्देशों पर काम नहीं करता, बल्कि खुद से सोचकर, स्थिति को गहराई से समझकर और फैसले लेकर कार्यों को अंजाम दे रहा है। चाहे वह डिजिटल पर्सनल असिस्टेंट हो जो आपकी मीटिंग्स को शेड्यूल कर रहा हो, या उद्योगों में लगे रोबोट जो उत्पादन प्रक्रिया को बिना किसी मानव हस्तक्षेप के चला रहे हों, एजेंटिक एआई ने दक्षता को नए स्तर पर पहुंचा दिया है। इससे इंसानों को रचनात्मक और उच्च-स्तरीय निर्णयों पर ध्यान केंद्रित करने का अवसर मिला है।

अगर उदाहरण देखें तो भारतीय स्टार्टअप क्रुत्रिम ने 2025 में 'क्रुति' नामक एक बहुभाषी एजेंटिक AI लॉन्च किया। यह 13 से अधिक भारतीय भाषाओं में संवाद कर सकता है, और उपयोगकर्ताओं के लिए रिचार्ज करना, टैक्सी बुक करना, सरकारी सेवाएँ एक्सेस करना जैसे कार्य स्वचालित रूप से यानी बिना किसी इंसानी हस्तक्षेप के करता है। यह भारत में डिजिटल पहुंच को गहरा बना रहा है।

एआई और पर्यावरण : एआई अब केवल मानव केंद्रित तकनीक नहीं रहा, यह अब धरती की रक्षा में भी अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। स्मार्ट सेंसर, पूर्वानुमान एल्गोरिदम और पर्यावरणीय निगरानी उपकरणों के साथ मिलकर एआई हमें एक हरित, टिकाऊ और संतुलित भविष्य की ओर ले जा रहा है। तकनीक और प्रकृति का यह सहयोग आने वाले वर्षों में सस्टेनेबल डेवलपमेंट की नींव बन सकता है। 2025 में, एआई न केवल मानवता के लिए, बल्कि धरती के स्वास्थ्य के लिए भी वरदान बनकर उभरा है।

आज एआई सैटेलाइट डेटा और कंप्यूटर विज़न का उपयोग करके वनों की निगरानी करता है और अवैध कटाई, खनन और आगजनी की पहचान करता है। एआई सेंसर नेटवर्क्स के माध्यम से वायु, जल और भूमि प्रदूषण की निगरानी कर सकता है, और संबंधित एजेंसियों को रियल-टाइम अलर्ट भेजता है।

Google DeepMind और Google Research का बनाया वेदर लैब एक इंटरएक्टिव वेबसाइट है, जो एआई पर आधारित अत्याधुनिक मौसम मॉडल्स को सार्वजनिक रूप से साझा करने का माध्यम है। यह विशेष रूप से ट्रॉपिकल चक्रवातों की भविष्यवाणी में मदद करता है। इसमें DeepMind के एक्सपेरिमेंटल मॉडल्स द्वारा तैयार की गई चक्रवात भविष्यवाणियां साझा की जाती हैं।

2025 में एआई ने न केवल तकनीक की सीमाओं को विस्तार दिया है, बल्कि मानव जीवन के हर पहलू को गहराई से प्रभावित किया है। स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण, वित्त और संवाद जैसे क्षेत्रों में इसकी भूमिका अब सहायक से आगे बढ़कर निर्णायक बन चुकी है। एआई की दुनिया अब सिर्फ कल्पना नहीं, 2025 में एक सजीव हकीकत बन चुकी है। यह तकनीक अब सोचती है, समझती है और इंसान के साथ मिलकर आगे बढ़ रही है। एआई की यही बदलती दुनिया भविष्य की नई दिशा तय कर रही है। ■

बनाएं जीवन प्राणवान

प्राणविद्या परिचय : सिद्धांत एवं व्यवहार

यह पुस्तक भारतीय जीवन -दर्शन के उस सूक्ष्म किन्तु अत्यंत महत्वपूर्ण बिन्दु को उजागर करती है जिसे 'प्राण' कहा गया है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में प्राण को मात्र साँस या शारीरिक ऊर्जा न मानकर, समग्र चेतना और जीवन का आधार माना गया है। यह पुस्तक उसी समग्र चेतना के दार्शनिक, वैज्ञानिक व आध्यात्मिक पक्ष को अनुभवात्मक रूप से एक यात्रा के स्वरूप में सूत्रपात किया है। यह यात्रा हमें प्राण के वास्तविक स्वरूप की ओर ले जाती है। इसमें इस बात को प्रमुखता से रखा गया है कि किसी विषय का वास्तविक ज्ञान तभी संभव है जब वह अनुभव से गुजरता है। प्राणविज्ञान कोई सैद्धांतिक अध्ययन मात्र नहीं, बल्कि अनुभूति की प्रक्रिया है। लेखक ने बताया है कि ज्ञान के तीन स्तर होते है- जानकारी, समझ व अनुभव। प्राण की समझ को हम तभी आत्मसात कर सकते हैं जब हम अनुभव के स्तर तक पहुंचे। जैसे सूर्य के उदय और अस्त का ज्ञान देखने से आता है, वैसे ही प्राण की गति, प्रवाह और उपस्थिति का बोध प्रत्यक्ष अभ्यास से संभव है।

लेखक ने स्पष्ट रूप से इन बातों पर प्रकाश डाला है कि प्राण की प्रवाह दिशा, गति, गुण और लय में सभी मिलकर जीवन का संचालन करते हैं एवं बाहयइंद्रियों से जो कुछ भी दिखाई देता है वह ही सत्य नहीं है। प्राण की गति की लयबद्धता ही मानसिक स्थिरता और शारीरिक स्वास्थ का मूल है।

प्राकृतिक स्रोतों में सूर्य को प्राण का मूल स्रोत बताया गया है। सूर्य से ही जीवों में ऊर्जा का संचार होता है और इसी ऊर्जा से अन्न के माध्यम से शरीर में प्राण प्रवेश करता है जो पाचन क्रिया द्वारा वह रस, रक्त, मांस आदि धातुओं ने परिवर्तित होता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में वनस्पतियों को भी प्राणवान माना गया है। लेखक ने प्राण भी अनुभूति को जीवन की सूक्ष्म

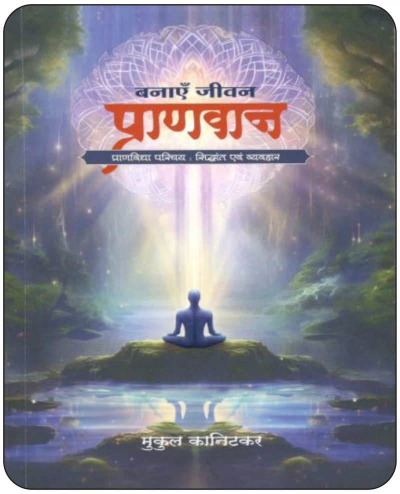

प्रक्रियाओं से जोड़ा है। विशेषकर यह विचार प्रभावशाली है कि हमारे भोजन के पहले 'नेवैद्य' अर्पण या मंत्रोच्चारण केवल धार्मिक विधियां नहीं, बल्कि प्राण की ग्रहणशीलता को जाग्रत करने की प्रक्रियाएं है। शरीर में प्राण का प्रवाह पांच प्रमुख गतियों द्वारा होता है- जिनमें से प्रत्येक का विशिष्ट कार्य एवं दिशा है। इस प्रवाह को नाड़ी तंत्र के माध्यम से समझाया गया है। ऋषियों द्वारा अनुभूत 72 लाख नाड़ियां इस पुस्तक के अनुसार प्राण के सूक्ष्म मार्ग है। यदि इन मार्गों में कोई अवरोध हो तो जीवन की सहजता बाधित हो जाती है।

निष्कर्षतः यह पुस्तक प्राचीन भारतीय जीवन दर्शन और आधुनिक विज्ञान के बीच सेतु का कार्य करती है। इसकी भाषा सहज और प्रवाहमयी है। जिससे जटिल विषय भी पाठक को सरलता से समझ आ जाये। यह कृति केवल पठनीय ही नहीं अपितु अनुकरणीय, अभ्यास व मनन की है। यह पुस्तक एक ऐसा दर्पण है जो हमें स्वयं के भीतर झांकने के लिए प्रेरित करता है और यह बताता है कि प्राण केवल जीवित रहने का साधन नहीं अपितु एक गूढ़ ऊर्जा है जो समस्त सृष्टि में व्याप्त है।

समीक्षक - डॉ. प्रियंका सिंह

पाठकों के लिए महत्वपूर्ण सूचना

प्रेरणा विचार पत्रिका के जिन पाठकों की वार्षिक सदस्यता जून, जुलाई एवं अगस्त 2025 में समाप्त हो रही है, वे पाठक अपनी सदस्यता के नवीनीकरण हेतु निम्न फार्म को भर कर या नीचे दिए गए QR CODE को स्कैन कर अपनी सदस्यता सुनिश्चित कर सकते हैं। फार्म हमारी ई-मेल आईडी (prernavichar@gmail.com) या व्हाट्सऐप नम्बर (9354133754) पर भेजें। अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नम्बर 9354133754 पर भी सम्पर्क कर सकते हैं।

नाम.. मोबाइल नं. ....

डाक का पूरा पता..

....

....पिन कोड. ....

प्रेरणा विचार पत्रिका की सदस्यता लेने के लिए QR CODE स्कैन करें

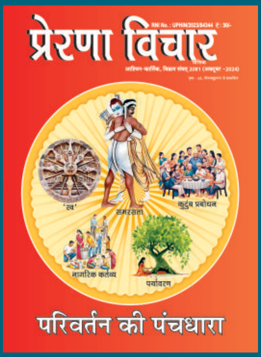

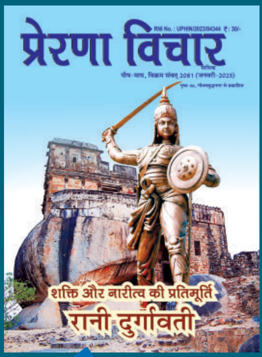

9354133754m@pnb

ऑनलाइन भुगतान के लिए लिए स्कैन करें

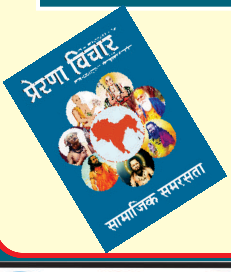

@PRERNAVICHAR

+919354133708

RNI No. : UPHIN/2023/84344
Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2023-24-25

NIRALA WORLD

Nirala Gateway

Sector 12, Greater Noida (W).

RETAIL | OFFICE | STUDIO APARTMENTS

Project Id: (UPRERAPRJ531916/06/2025)
Registration Date: 17-06-2025
Promoter Name: Parth Builtech Private Limited
Promoter Id: (UPRERAPRM348231)
Website: https://www.up-rera.in/projects